विश्व का समाचार-जगत्- 1

पत्रकारिता एवं जनसंचार स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम
(Master of Journalism & Mass Communication)

विश्व का समाचार-जगत्

अंतर्राष्ट्रीय समाचार-जगत्
विश्व के विकसित समाचार पत्र

1

पत्रकारिता एवं जनसंचार
स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम

विश्व का समाचार- जगत्

1

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

- **प्रो. जी.एस.एल. देवड़ा**
  कुलपति
  कोटा खुला विश्वविद्यालय
  कोटा
  (अध्यक्ष समिति)
- **डॉ. अब्दुल वहीद खान**
  निदेशक (विकास एवं प्रशिक्षण)
  कॉमनवेल्थ सेण्टर ऑफ लर्निंग 1285 ब्राइवे
  सूट 600, वैंकवर (कनाडा)
- **राधेश्याम शर्मा**
  पूर्व-महानिदेशक
  माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता
  विश्वविद्यालय, भोपाल(म. प्र.)
- **डॉ. ओ.पी. केजरीवाल**
  निदेशक, नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एण्ड लाइब्रेरी
  तीन मूर्ति भवन, नई दिल्ली
- **प्रो. ए.के. बनर्जी**
  पूर्व-अध्यक्ष
  पत्रकारिता विभाग
  बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय
  वाराणसी
- **प्रो. जे.एस. यादव**
  भारतीय जनसंचार संस्थान
  नई दिल्ली
- **डॉ. भंवर सुराणा**
  ब्यूरो चीफ/ विशेष संवाददाता
  दैनिक हिंदुस्तान
  जयपुर
- **डॉ. रमेश जैन**
  अध्यक्ष-जनसंचार विभाग
  कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा
  (सचिव, समिति)

संयोजक

डॉ. रमेश जैन- अध्यक्ष, जनसंचार विभाग
कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा

पाठ-संपादक एवं भाषा-संपादक

पाठ-संपादक
डॉ. रमेश जैन
अध्यक्ष, जनसंचार विभाग
कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा

भाषा-संपादक
डॉ. विष्णु पंकज
वरिष्ठ साहित्यकार-पत्रकार
जयपुर

अकादमिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

- डॉ. आर.वी. व्यास, कुलपति
- डॉ. एच.बी. नन्दवाना, विभागाध्यक्ष
- डॉ. पी.के. शर्मा, निदेशक, पा.सा.उ. एवं वि. विभाग

पाठ्यसामग्री उत्पादन एवं वितरण विभाग

- योगेन्द्र गोयल
  सहायक उत्पादन अधिकारी

सर्वाधिकार सुरक्षित ! इस पाठ्यक्रम का कोई भी अंश कोटा खुला विश्वविद्यालय/ वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा की लिखित अनुमति प्राप्त किए बिना या मिम्योग्राफी(चक्रमुद्र) अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करना वर्जित है।

वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों के विषय में और अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कुलसचिव, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, रावतभाता रोड, कोटा से प्राप्त की जा सकती हैं।

कुलसचिव, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा द्वारा प्रकाशित

पाठ लेखक

(1) प्रो. प्रदीप माथुर
भारतीय जनसंचार संस्थान
नई दिल्ली

(2) डॉ. विष्णु पंकज
वरिष्ठ जनसंचारकर्मी
जयपुर

(3) डॉ. अर्जुन तिवारी
अध्यक्ष, पत्रकारिता विभाग
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

(4) जयदेव
वरिष्ठ जनसंचारकर्मी
जयपुर

(5) मुरली मनोहर मंजुल
वरिष्ठ जनसंचारकर्मी
जोधपुर

(6) डॉ. रमेश जैन
जनसंचार विभाग
कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा

(7) गुलाब बत्रा
वरिष्ठ पत्रकार 'वार्ता' समाचार समिति
जयपुर

(8) रामकुमार
स्वतंत्र पत्रकार, लेखक
कोटा

अनुवाद

रामकुमार
स्वतंत्र पत्रकार, लेखक, कोटा

खंड एवं इकाई परिचय

खंड परिचय

एच. जे. एम.सी. -5 पाठ्यक्रम का प्रथम खंड आपके हाथ में हैं । इस खंड में तीन इकाईयां हैं -1 समाचार पत्रों का उद्‌गम और विकास, 2 अन्तराष्ट्रिय समाचार जगत' 3 विश्व के विकसित समाचारपत्र । आइए अब हम इन इकाइयों के बारे में विस्तार से परिचय प्राप्त करे ।

इकाई परिचय

इकाई 1 'समाचारपत्रों का उद्‌गम और विकास' की है । इस इकाई में समाचारपत्र का स्वरूप, समाचारपत्रों का उद्‌गम समाचारपत्रों का विकास ओर वर्तमान समाचार पत्रों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई है।

समाचार पत्र जीवन का अनिवार्य अंग बन गया है । समाचारपत्रों के उद्भव और विकास का विवरण समाजसेवा, राष्ट्रिभक्ति और स्वतंत्र अभिव्यक्ति की गौरवपूर्ण गाथा है।

इकाई 2 'अंतराष्ट्रीय समाचार जगत' की है । इस प्रमुख बिन्दु है - अन्तराष्ट्रिय समाचार जगत : एतिहासिक पृष्ट भूमि, अन्तराष्ट्रिय क्षेत्र में सूचना, राजनीति, संयुक्त राष्ट्र संघ एवं अन्य एजेन्सियों के प्रयास, अन्तरिक्ष में सूचना प्रवाह का प्रश्न तथा गुट निरपेक्ष आंदोलन के विकास पर बल ।

विश्व के विकसित समाचारपत्र' **इकाई 3** है । प्रस्तुत इकाई में विश्व समाचार जगत के बदलते आयाम, दुनिया के अखबारो का सर्वेक्षण, विश्व की विकसत प्रेस प्रणाली, भारत में समाचार जगत की विशेषताओं का विस्तार से विवेचन की गई है।

उपरोक्त तीनों इकाइयां समाचारपत्र के उद्भव और विकास का प्रामाणिक जानकारी के अतिरिक्त अन्तराष्ट्रिय समाचार जगत पर यथेष्ट प्रकाश डालती है ।

एम. जे. एम. सी. -5

विश्व का समाचार जगत्

पाठ्यक्रम - पंचम
खण्ड- प्रथम

1

विश्व का समाचार जगत्

इकाई 1 समाचार पत्रों का उद्गम और विकास	8–23
इकाई 2 अन्तराष्ट्रिय समाचार जगत्	24–37
इकाई 3 विश्व के विकसित समाचारपत्र	38–51

इकाई 1 समाचारपत्रों का उद्‌गम एवं विकास

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 समाचारपत्र का स्वरूप

- 1.2.1 समाचारपत्र की परिभाषा
- 1.2.2 'समाचारपत्र' शब्द की विकास-यात्रा
- 1.2.3 समाचारपत्रों के प्रकार
- 1.2.4 समाचारपत्रों के दायित्व
- 1.2.5 समाचारपत्रों का स्वामित्व

1.3 समाचारपत्रों का उद्‌गम

- 1.3.1 समाचारपत्रों का प्रारम्भिक रूप
- 1.3.2 मुद्रण कला और विश्व में पत्र-प्रकाशन
- 1.3.3 भारत में प्रेस की स्थापना और समाचारपत्र
- 1.3.4 हिन्दी समाचारंपत्रों का उद्‌गम

1.4 समाचारपत्रों का विकास

- 1.4.1 विदेशों में समाचारपत्रों का प्रकाशन
- 1.4.2 भारत में पत्रों का विकास
- 1.4.3 हिन्दी समाचारपत्रों की प्रगति

1.5 वर्तमान समाचारपत्र

- 1.5.1 विदेशों में प्रकाशित पत्र
- 1.5.2 भारत के समाचारपत्र
- 1.5.3 स्वतन्त्रता-संग्राम के हिन्दी पत्र
- 1.5.4 स्वातंत्र्योत्तर भारत के हिन्दी समाचारपत्र
- 1.5.5 साम्प्रतिक समाचारपत्रों की प्रवृत्ति

1.6 सारांश

1.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.8 निबन्धात्मक प्रश्न

1.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने लेने के बाद आप

- समाचारपत्र का स्वरूप जान सकेंगे,
- समाचारपत्रों के दायित्व को समझ सकेंगे,
- मुद्रण कला के विकास के पूर्व समाचारपत्रों की स्थिति से अवगत हो सकेंगे,
- मुद्रण कला और प्रारम्भिक पत्रों की जानकारी हो सकेगी,
- उन्नीसवीं सदी में प्रकाशित विश्व के पत्रों से परिचित हो सकेंगे,

- इक्कीसवीं सदी के समाचारपत्रों की स्थिति को समझ सकेंगे,
- समाचारपत्रों के उद्‌गम और विकास की बाधाओं से सुपरिचित हो सकेंगे,
- वर्तमान समाचारपत्र -जगत की प्रवृत्तियों को जान सकेंगे,

इस प्रकार समाचारपत्र के उद्‌गम और विकास के बारे में पर्याप्त जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

आपके दैनिक जीवन का अनिवार्य अंग समाचारपत्र है। यही समाचारपत्र आपके लिए शिकायतखोर, टीकाकार, सलाहकार तथा शिक्षक है जिसके बिना जीवन सुना-सुना है। जन-जन के सुख-दु:ख को स्वर दे वाला समाचारपत्र है जो कवि फैज के अनुसार अभिव्यक्ति का सहज साधन है -

'मेरे दर्द को जो जुबॉ मिले,
मुझे मेरा नामो निशां मिले।'

ऐसे ही समाचारपत्रों का उद्‌गम बड़ा ही रहस्यमय, प्रेरणामय और रोचक है। विश्वबंधु बापू के अनुसार 'समाचार का पहला उद्देश्य जनता की इच्छाओं विचारों को समझना और उन्हें व्यक्त करना है। दूसरा उद्देश्य जनता में वांछनीय भावनाओं को जागृत करना है, तीसरा उद्देश्य सार्वजनिक दोषों को निर्भयतापूर्वक प्रकट करना है।' अठारहवीं, उन्नीसवीं और बीसवीं सदी में समाचारपत्रों के उद्भव और विकास का विवरण समाजसेवा, राष्ट्रभक्ति और स्वतंत्र अभिव्यक्ति की गौरवपूर्ण गाथा है जिसका अध्ययन जीवन को गौरवशाली बना सकता है।

1.2 समाचारपत्र का स्वरूप

1.2.1 समाचारपत्र की परिभाषा : समाचारपत्र एक दर्पण है जिसकी सहायता से विश्व की गतिविधि, स्वराष्ट्र के उत्थान-पतन एवं अपने समाज की ज्वलन्त समस्याओं से हम परिचित होते हैं। समाचारपत्र समाज का थर्मामीटर है जिससे सामाजिक वातावरण का तापमान जाना जा सकता है। दूरबीन की भाँति पत्र भविष्य में होने वाली दूर-दूर की घटनाओं का आभास दे देता है। समाचारपत्र वह सर्व-सुलभ नियतकालिक पत्र है जिसमें सार्वजनिक समाचार और उससे संबंधित टिप्पणी प्राप्त होती है। 'एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' के अनुसार समाचारपत्र एक अजिल्द धारावाही प्रकाशन है जो नियत समय के अन्तर पर प्रकाशित होता है और जिसमें समाचारों को प्रमुखता दी जाती है।

1.2.2 'समाचारपत्र ' की विकास यात्रा

समाचारपत्रों का उद्भव अधिकारियों के पास भेजी जाने वाली चिट्ठियों से हुआ। चिट्ठियों को एक साथ जिल्द बाँधकर सार्वजनिक मिसल की भाँति रखा जाता था जिन्हें 'न्यूज बुक ' (समाचार ग्रंथ) कहा गया। जब संवाददाता अनेक अधिकारियों के पास समाचार चिट्ठियां भेजने लगे तो इसका नाम 'न्यूज लेटर ' (समाचार चिट्ठी) रखा गया। बाद में न्यूज लेटर ', 'न्यूज शीट ' में परिणत हुआ।

बाद में अनेक सुधार हुए तथा 'न्यूज पेपर ' (समाचारपत्र) नाम प्रचलित हुआ। सन् 1566 ई. यूरोप में युद्ध और व्यापार से संदर्भित हस्तलिखित पत्रों को सुनने के लिए श्रोतागण को एक 'गजेटा' (छोटा सिकका) देना पड़ता था। इसी से 'गजेटा' के नाम पर पत्रों को 'गजेटा' कहा गया। सम्प्रति 'गजट' तो सूचना पत्र या समाचारपत्र का पर्याय हो चुका है।

मुगलकाल में 'फरमान ', 'दस्तक ', 'परवाना ', 'महजार ', 'एकाउण्ट -पेपर ', 'बिक्री नामा' -ये सभी पत्र के ही पर्याय थे। फारसी के 'खबर ' का बहुवचन ' अखबार ' है। बंगा में 'संवादपत्र ' और 'वार्तावह ' शब्द प्रचलित है। मराठी में 'वृत्त पत्र ', समाचारपत्र के अपर नाम हैं।

1.2.3 समाचारपत्रों के प्रकार

(क) प्रकाशन अवधि की दृष्टि से समाचारपत्रों को दैनिक, द्विदैनिक, अर्द्ध-साप्ताहिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक पत्रों के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। दैनिक पत्रों में 24 घंटों की घटनाएँ टिप्पणियों के साथ प्रकाशित होती हैं। समसामयिकता और समाचार प्रधान पत्रों में समाचार का स्वर प्रमुख होता है जिसमें सपाट बयानी होती है। साप्ताहिक पाक्षिक पत्रों में समाचार-विचार का विशद विवेचन होता है।

(ख) विक्रय संख्या की दृष्टि से बड़ा समाचारपत्र, मध्यम समाचारपत्र और लघु समाचारपत्र ये तीन श्रेणियाँ होती हैं।

1.2.4 समाचारपत्रों के दायित्व

समाचारपत्रों के निम्नलिखित दायित्व हैं -

1. प्रतिदिन की नूतन घटनाओं का सही-सही सुबोध ढंग से विवरण प्रकाशित करना।
2. विचारों के आदान-प्रदान का सफल माध्यम बनाना।
3. अग्रलेखों, समाचार समीक्षाओं, स्तम्भों एवं विशिष्ट लेखों द्वारा स्वस्थ जनमत का निर्माण करना।
4. समाजोपयोगी एवं स्वस्थ मनोरंजन के साधन उपलब्ध कराना।
5. आर्थिक, औद्योगिक और सांस्कृतिक विकास हेतु दिशा निर्देश करना।
6. राष्ट्र के सुरक्षा के प्रति सतर्क और राष्ट्रीयता एकता को प्रोत्साहन देना।

12.5 समाचारपत्रों का स्वामित्व

समाचारपत्रों के स्वामित्व का स्वरूप लोकहित तथा सम्पादकीय स्वतंत्रता का निर्धारक होता है। किसी निहित स्वार्थ वाले उद्योगपति के यहाँ कार्यरत सम्पादक पत्रकारिता के आदर्शों से च्युत होकर लोकहित को गौण बना देता है तथा स्वामी के संकेतों पर पत्र के पृष्ठों को काला करता रहता है। इस तरह पत्र की आत्मा मर जाती है तथा समाचारपत्र अर्थोपार्जन, चाटुकारिता एवं पक्ष विशेष का उद्घोषक मात्र रह जाता है। समाचारपत्रों के स्वामित्व के विविध रूप निम्नलिखित हैं-

1. एकल स्वामित्व

इसमें मालिक ही पत्र का सम्पादक तथा प्रबन्धक होता है और समय पड़ने पर हर तरह का कार्य उसके द्वारा सम्पन्न होता है। चूँकि पत्र के लाभ-हानि से मालिक प्रत्यक्ष रूपेण प्रभावित होता है अत: पूरी जिम्मेदारी एवं निष्ठा से अहर्निश समाचारपत्र की चतुर्दिक प्रगति हेतु वह

कटिबद्ध रहता है। एकल स्वामित्व का सबसे बडा दोष यही है कि कभी-कभी स्वामी की अनवधानता, शिथिलता तथा हठधर्मिता के कारण पत्र-व्यवसाय चौपट हो जाता है। स्वामी की मृत्यु के बाद समाचारपत्र की जीवन शक्ति मद पड़ जाती है। एकल स्वामित्व वाले संस्थान को दीर्घकालीन ऋण प्राप्ति में बहुत बाधाएँ आती हैं। एक व्यक्ति द्वारा पत्र-संचालन के असीमित दायित्व का सफलतापूर्वक निर्वहन वर्तमान औद्योगिक प्रगति के युग में कठिन है। सर्व श्री एन.एन. शाह (राजकोट), श्रीमती वी.डी. चौधरी (अजमेर), के.एम. आजिम औतिष (बंगलौर), सैयद अबीसुर रहमान (दिल्ली), जी.बी. भोंसले (सांगली) और द्वारका प्रसाद अग्रवाल (भोपाल) द्वारा दैनिकों का प्रकाशन चलता रहा है।

2. साझेदारी

एक ही व्यक्ति जब पत्र-व्यवसाय को चलाने में असमर्थ होता है तो साझेदारी अधिनियम सन् 1932 की धारा 4 के अनुसार "partnership is the relation between persons who have agreed to share the profit of a business caused on by all orany of them acting for all." साझेदारी में व्यापार के लाभ को आपस में बांटने का समझौता किया जाता है। इसमें सभी अथवा सबके प्रतिनिधि के रूप में एक व्यक्ति कार्यरत होता है। एक से अधिक व्यक्तियों के मस्तिष्क के लगने से व्यापार में चतुर्दिक प्रगति होती है। प्रकाशन की जिम्मेदारियां बंट जाती हैं और प्रत्येक साझेदार पर अपेक्षाकृत कम बोझ पड़ता है। छल-कपट के कारण एक नेक साझेदार को भी बदनामी और अर्थ-संकट का सामना करना पड़ता है। उत्तरदायित्व को दूसरों पर मढ़ देने की प्रवृत्ति के कारण व्यापार में प्रत्याशित प्रगति नहीं हो पाती। फर्म आर.सी. सेठ तथा अन्य (अहमदाबाद), फर्म रामगोपाल माहेश्वरी तथा अन्य (नागपुर), फर्म के. नरेन्द्र तथा अनिल नरेन्द्र (दिल्ली), और फर्म वाई. के. खांडिलकर तथा अन्य (बम्बई) द्वारा साझेदारी व्यवस्था में पत्र छप रहे हैं।

3. मिश्रित पूंजी कम्पनी

भारतीय कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा तीन के अनुसार इन कम्पनियों का पंजीकरण होता है इसमें अंशधारी का दायित्व सीमित होता है तथा व्यापार का विस्तार पूंजी बढ़ाकर सरलता के साथ किया जा सकता है। कई तरह के कानूनी प्रतिबन्धों के अन्तर्गत कार्य करने पर बड़ी कठिनाई होती है तथा टैक्स में कोई सुविधा प्राप्त नहीं होती।

प्रमुख भारतीय समाचारपत्रों पर मिश्रित पूंजी कम्पनियों का अधिकार है। इण्डियन एक्सप्रेस न्यूज पेपर्स प्राइवेट लिमिटेड, बम्बई, बेनेट कोल मैन एण्ड कम्पनी लिमिटेड, बम्बई, आनन्द बाजार पत्रिका (प्राइवेट) लिमिटेड, कलकत्ता, हिन्दुस्तान टाइम्स तथा सम्बद्ध प्रकाशन दिल्ली, न्यूज पेपर्स एण्ड पब्लिसर्स (प्राइवेट) लिमिटेड, पटना एसोसिएटेड जर्नल्स लिमिटेड, लखनऊ और पायोनियर लिमिटेड लखनऊ द्वारा अनेक गौरवशाली पत्रों के प्रकाशन का कार्य चल रहा है।

4. ट्रस्ट

किसी विशेष उद्देश्य के प्रचार-प्रसार हेतु समाचारपत्र को सम्पत्ति समर्पित समाज-सेवियों के प्रबन्ध के अन्तर्गत देने की दृष्टि से ट्रस्ट की स्थापना की जा रही है। प्रकाशन से लाभ की आशा न कर सभी ट्रस्टी सेवा-भाव से पत्र के नियमित प्रकाशन पर बल देते हैं। थांती ट्रस्ट, सौराष्ट्र ट्रस्ट और लोकशिक्षण, 'ट्रस्ट ट्रिब्यूशन ' जैसे ट्रस्टों द्वारा अनेक पत्र प्रकाशित हो रहे हैं।

5. समितियाँ तथा संस्थाएँ

समितियों और संस्थाओं के लक्ष्यों को जन सामान्य पहुँचाने के लिए कुछ पत्रों का प्रकाशन होता है जिनका उद्देश्य लाभार्जन नहीं होता है। सर्वेन्ट्स ऑफ इण्डिया सोसाइटी, नागपुर, सर्वेन्ट्स ऑफ दी प्यूपिल सोसाइटी, कटक और ऑल इण्डिया कश्मीरी पं. कान्फ्रेंस, श्रीनगर द्वारा अनेक पत्र निकाले जाते हैं।

समाचारपत्रों के प्रकाशक यदि निष्ठावान हुए तो जनता के प्रति अपने दायित्वों का निर्वाह कर सकते हैं। प्रेस रजिस्ट्रार की रिपोर्टों से ज्ञात होता है कि अपने देश में मिश्रित पूँजी कम्पनी का स्वामित्व सर्वाधिक प्रचलित है।

देखा जाता है कि शक्ति -सम्पन्न और उच्च-पदस्थ व्यक्तियों की त्रुटियों को प्रकाशित करने में पत्र भीरुता दिखलाते हैं। सामान्य नागरिकों की कमियों को धड़ल्ले से प्रकाशित करते हैं। यह भी पाया जाता है कि समाचारपत्र से सम्बद्ध वित्तीय संस्थाओं के हितों के प्रतिकूल समाचारों को दबा दिया जाता है। स्वामित्व तथा सम्पादकीय रुझान में अनेक दोष होते हैं। निजी संस्था की अपेक्षा सार्वजनिक संस्था को प्राथमिकता दिया जाना श्रेयस्कर है। ऐसे तो ट्रस्ट का स्वामित्व पत्रकारिता जगत में स्पृहणीय है। पत्रों के स्वामित्व अनेकात्मक और व्यापक आधार वाले हो तो अभिव्यक्ति - स्वातंत्र्य को प्राथमिकता प्राप्त होती है।

बोध प्रश्न- 1

1. समाचारपत्र किसे कहते हैं? संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।
2. समाचार -पत्र के विविध रूपों को लिखिए।
3. समाचारपत्रों के स्वामित्व पर प्रकाश डालिए।
4. 'एकल स्वामित्व ' से आप क्या समझते हैं?
5. 'ट्रस्ट ' के अन्तर्गत जो समाचारपत्र प्रकाशित हो रहे हैं, उनके नाम बताइए।

1.3 समाचारपत्रों का उद्गम

1.3.1 समाचारपत्रों का प्रारम्भिक रूप

आजकल जन-मानस को सूचित, शिक्षित और आनन्दित करने वाले समाचारपत्र हैं। प्राचीनकाल में सूचना-प्रसारण का कार्य गुरुओं, ऋषि-मुनियों द्वारा सम्पादित होता था, जो घूम-घूम कर संदेश पहुँचाया करते थे। लेखन-कला के प्रचलन के बाद भोजपत्रों, ताड़पत्रों पर सूचनाएँ लिखी जाने लगी। डोंडीगर, घंटे वाले, शिलालेख, विभिन्न राजाओं के सिक्के, मतावलम्बियों के गुटकों को मुद्रित समाचारपत्रों का पूर्वज माना जा सकता है। ई.पू. पाँचवी शताब्दी के पहले रोम में ऐसे लेखक थे जो राजधानी से दूर निवासियों तक समाचार लिखकर पहुँचाते थे। हस्तलिखित समाचारपत्रों का प्रचलन लोकप्रिय था। व्यापारी और राजा ऐसे संवाद लेखकों को सम्मान देते थे। ई.पू. 60 में जूलियस सीजर ने निम्नलिखित तीन समाचार बुलेटिन शुरू किए

1. एक्टाडिउना - दैनिक समाचार बुलेटिन जिसमें सरकारी घोषणाएँ रहती थीं।
2. एक्टा सिनेटस - इसमें विधेयकों, भाषणों और रोमन सीनेट की जानकारी होती थी।
3. एक्टा पब्लिका - जन सामान्य से संदर्भित बातों के साथ इसमें वित्त सम्बन्धी सूचनाएँ होती थीं।

मुद्रण -कला के आविष्कार के पूर्व मौखिक शब्दों, व्यक्तिगत पत्रों, सार्वजनिक स्थलों पर चिपकाई कई सूचनाओं द्वारा संवाद -प्रेषण का कार्य सम्पन्न होता था। अफगान और मुगल शासकों के समय घटनाओं के विवरणों, समारोहों ओर शिकायतों की बातों एवं प्रमुख खबरों को नियमित रूप से राज्य के समाचार रजिस्टरों में लिखा जाता था। सरकार के सभी केन्द्रों में ऐसी लेखन की व्यवस्था थी। विभागीय अध्यक्षों को 'वाकयाने गौर्स ' या 'राज्य सूचना संग्राहक ' कहते थे। 'आईन-ए-अकबरी ' में उल्लेख प्राप्त होता है कि विभागीय अध्यक्षों की सहायता के लिए 'वाकयानुगार ', 'सावानहानुगार आहोफियाह-नवीस ' तथा 'हरकारा ' नियुक्त होते थे। मुगलकाल में समाचारों के संग्रह और लेखनकर्त्ता को ' अखबार नवीस ' कहा जाता था जो समाचारपत्रों के संचालन का कार्य करते थे।

1.3.2 मुद्रण कला और विश्व में पत्र-प्रकाशन

छापने की कला के प्रारम्भ होने से समाचारपत्रों के उद्‌गम का मार्ग प्रशस्त हुआ। चीन में 175 ई. में ठप्प से मुद्रित ग्रंथ का कुछ भाग आज भी विद्‌यमान बताया जाता है। 972 ई. में एक लाख तीस हजार पृष्ठों का त्रिपिटक ग्रंथ छपा। वर्तमान मुद्रण पद्धति की कहानी 500 वर्ष से पीछे नहीं जाती। अलग-अलग अक्षरों के धातु का टाइप सर्वप्रथम 1450 ई. में जर्मनी में बना। तत्पश्चात् 1466 में फ्रांस, 1477 में इग्लैण्ड और 1544 में पुर्तगाल में इस कला का प्रसार हुआ। पुर्तगाल में ईसाई धर्म प्रचारकों द्‌वारा गोवा शहर में यह कला आयी।

चीन के 'पेकिंग गजट' से पत्रकारिता का प्रारम्भ माना गया है। बाइबिल के अधिकाधिक प्रसार की प्रेरणा वश गाटनबुरो नामक ईसाई ने मध्य जर्मनी के मायन्स नगर में सन् 1440 ई. में आधुनिक मुद्रण कला से साम्य रखने वाले प्रेस की स्थापना की। आजकल के समाचारपत्रों का प्रारम्भिक रूप नीदर लैण्ड के 'न्यूजईटुंग' (1526 ई.) में मिलता है। सन् 1615 ई. में जर्मनी से फ्रैकफुटैर जर्नल', 1631 ई. में फ्रांस से 'गजट द फ्रांस', 1667 ई. में बेलजियम से गजट वैन गट', का प्रकाशन हुआ। स्वीडन में 1645 ई. में 'आर्डिनरी पोस्ट टिजडेंडर' छपा। जर्मनी के प्रारम्भिक पत्रों में 'जीतुंग्ग', 'इंटेलिजुआंग', 'डेर पेट्रियाट' का नाम आता है।

ब्रिटेन में 'न्यूज लेटर' के रूप में इधर-उधर की बातों एवं समाचारों को संग्रहीत कर विभिन्न स्थानों पर भेजा जाता था। ये न्यूज लेटर अधिकांशत: हस्तलिखित थे। प्रारम्भिक प्रयत्नों की दृष्टि से सन् 1561 में 'न्यूज आउट केन्ट' (एक पृष्ठीय पत्र), 1675 में पत्र 'न्यू न्यूज' आदि प्रमुख हैं। सन् 1621 में एक-एक तथा दो-दो पुष्ठों के दो समाचार पत्रों के प्रकाशन के उल्लेख मिलते हैं। सन् 1621 में आर्चर ने 'डच न्यूज शीट' का प्रकाशन प्रारम्भ किया और उसे इस दुस्साहस' के लिए दण्डित भी किया गया।

सन् 1665 में मुडिमन के सम्पादन में 'आक्सफोर्ड गजट' निकला। यह प्रथम नियतकालीन प्रकाशन माना जा सकता है। पत्र सप्ताह में दो बार प्रकाशित होता था जो 24 अंकों के बाद 'लन्दन गजट' के रूप में परिवर्तित हो गया। 11 मार्च, 1702 को पहला दैनिक लुडगेट हिल के कार्यालय के निकट से प्रकाशित हुआ। एक पैनी मूल्य के इस पत्र का नाम 'डेलो कोरांट' था। इस पत्र की स्थापना एलिजाबेथ मेलेट ने की थी। इस पत्र में अन्य महाद्‌वीपों के समाचारपत्रों के समाचारों का पुनर्प्रकाशन किया जाता था। सन् 1709 में 'नारवित्त पोस्ट' के साथ इंग्लैण्ड में प्रादेशिक पत्रकारिता का प्रारम्भ हुआ।

अट्ठारह वीं शताब्दी में ब्रिटेन में अनेक ऐसे प्रखर और प्रबुद्ध पत्रकार हुए हैं जिनमें डेफो, एडीसन, स्टील, फिल्डिंग सेम्यूअल जानसन आदि प्रमुख थे जिनकी पत्रकारिता सुलभ मानदण्डों को अमेरिका ने अपनाया। प्रारम्भिक पत्रों में मनोरंजन तत्व अधिक था। समाचारत्व की कमी के कारण उनका साहित्यिक रूप अधिक निखरा। सन् 1704 में डेनियल डेफों के 'रिव्यू' के प्रकाशन के बाद आधुनिक पत्रकारिता का उद्भव होता है। डेफो ने इस पत्र के माध्यम से दायित्वपूर्ण रिपोर्टिंग की परम्परा प्रारम्भ की। डेफो के इस महत्वपूर्ण योगदान के कारण उसे आधुनिक पत्रकारिता का जन्मदाता माना है। सन् 1709 में स्टील ने 'टेटलर' पत्र की स्थापना की। पत्र में महत्वपूर्ण समाचार, विज्ञापन, नई पुस्तकों तथा नाटकों आदि का भी प्रकाशन होने लगा।

सन् 1771 ई. में प्रारम्भ 'स्पेक्टेटर' दार्शनिकों के विचारों को प्रमुखता देता है। 'लंदन डेली एडवाइजर' (1726) 'लंटन डेली यूनिवर्सल रजिस्टर' (1785) जो सन् 1788 में 'टाइम्स' में परिवर्तन हो गया, 'मार्निंग क्रानिकल (1769) मार्निंग पोस्ट (1772), अट्ठारहवीं सदी के प्रमुख पत्र थे। 25 मार्च, 1690 की आर. पीयर्स के प्रेस में चार पृष्ठीय समाचारपत्र पब्लिक अकरन्मेंस बोथ फारेन एण्ड डोमेस्टिक', का प्रकाशन किया गया। यह पत्र सिर्फ तीन पन्नों पर ही मुद्रित था। चौथा पृष्ठ रिक्त छोड़ दिया गया ताकि पाठक इसे दूसरों को देने से पूर्व स्वयं के समाचार उस पर लिख सकें। पृष्ठ का आकार $6\times10^{1/4}$ इंच था। मेकअप की ओर ध्यान नहीं दिया गया था। हैरिस के इस प्रयास के बाद लगभग 14 वर्ष तक किसी समाचारपत्र के प्रकाशन का उल्लेख नहीं मिलता है।

24 अप्रैल, 1704 को प्रथम अमेरिकी समाचारपत्र 'बोस्टन न्याय लेटर' का प्रकाशन हुआ। यह प्रकाशन जॉन केपबेल के द्वारा हुआ। सन् 1741 तक पाँच पोस्ट मास्टर गजट का प्रकाशन लगातार करते रहे।

जेम्स फ्रेंकलिन के छोटे भाई ने 12 अक्टूबर, 1729 को 'पेनसिल्वानिया गजट' के प्रकाशन को अपने हाथ में लिया। पहले इस पत्र का नाम यूनिवर्सल इंस्ट्रक्टर इन आल आर्ट्स एण्ड साइंस एण्ड गजट' था। 20 मार्च, 1727 को 'न्यू इंग्लैण्ड वीकली जर्नल' का प्रकाशन हुआ, जिसने अपने संवाददाताओं की नियुक्ति की। 8 नवम्बर, 1725 को विलियम ब्रेडफोर्ड ने 'न्यूयार्क गजट' का प्रकाशन शुरू किया। अट्ठारहवीं शताब्दी के मध्य तक अमेरिका में प्रेस को स्वतन्त्रता मिलने लग गयी थी। प्रेस को जन समर्थन भी मिलने लगा। सन् 1765 तक अमरीकी उपनिवेशों में लगभग पचास पत्र प्रकाशित होते थे।

12.3.3 भारत में प्रेस की स्थापना और समाचारपत्र

भारत में गोवा में 1550 ई. में प्रेस की स्थापना हुई। बम्बई में 1662 ई., मद्रास में 1772 ई. तथा कलकत्ता' में सन् 1779 ई. में प्रेस बैठाये गये। 29 जनवरी, 1780 ई. वह स्वर्णिम दिवस है जिस दिन एक गैर भारतीय द्वारा पत्र प्रकाशित हुआ। 'बंगाल गजट एण्ड केलकटा एडवर्टाइजर' के सर्वस्व जेम्स अगस्टस हिकी थे। संक्षेप में इस पत्र को 'हिकीज गजट' कहा जाता है, जिसका लक्ष्य था- A weekly political and commercial paper open to all parties but influenced by none.' (यह राजनीतिक और व्यापारिक पत्र खुला तो सबके लिए है, पर प्रभावित किसी से नहीं है।)

'इंडियन गजट' (1780), 'बंगाल जर्नल' (1784) और 'इंडियन वर्ल्ड' (1791) कलकत्ते से ही प्रकाशित हुए। भारतीय पत्रकारिता के जनक राजा राममोहन राय (1772- 1833) के प्रयास से 1818 ई. में 'बंगाल गजट', 1821 ई. में 'संवाद कौमुदी' और 'मिरातुल अखबार' निकले। पत्र-प्रकाशन के लक्ष्य को उन्होंने स्पष्ट किया-

'मेरा उद्देश्य मात्र इतना ही है कि जनता के सामने ऐसे बौद्धिक निबन्ध उपस्थित करूँ जो उनके अनुभव को बढाये और सामाजिक प्रगति में सहायक सिद्ध हो। मैं अपनी शक्ति भर शासकों को उनकी प्रजा की परिस्थितियों का सही परिचय देना चाहता हूँ और प्रजा को उनके शासकों द्वारा स्थापित विधि-व्यवस्था से परिचित कराना चाहता हूँ ताकि शासक जनता को अधिक से अधिक सुविधा देने का अवसन् पा सके और जनता उन उपायों से अवगत हो सके जिनके द्वारा शासकों से सुरक्षा पायी जा सके और उचित माँगे पूरी करायी जा सकें।'

राजाराम मोहन राय के उपर्युक्त विनीत भाव से अंग्रेज शासक पिघले नहीं, उन लोगों ने पत्र-प्रकाशन को हर प्रकार से हतप्रभ किया। उन्नीसवीं शताब्दी के तीसरे दशक में मद्रास के गर्वनर सन् टॉमस मुनरो ने प्रेस की आजादी को आंग्ल सत्ता की समाप्ति का पर्याय माना। उनके ही शब्दों में, '..... इनको प्रेस की आजादी देना हमारे लिए खतरनाक है। विदेशी शासन और समाचारपत्रों की स्वतन्त्रता दोनों एक साथ नहीं चल सकते। स्वतन्त्र प्रैस का पहला कर्त्तव्य क्या होगा? यही न, कि देश को विदेशी चंगुल से स्वतन्त्र कराया जाए? इसलिए अगर हिन्दुस्तान में प्रेस की स्वतन्त्रता दे दी गयी तो उसका जो परिणाम होगा, वह दिखाई दे रहा है।'

1.3.4 हिन्दी समाचारपत्रों का उद्‌गम

हिन्दी समाचारपत्र का उद्‌गम 'उदन्त मार्तण्ड' से अथवा 'दिग्दर्शन' से माना जाए? बुद्धिजीवियों में यह विवाद का विषय है। सन् 1818 ई. में प्रकाशित 'दिग्दर्शन' श्रीरामपुर मिशन के सरंक्षण में नेटिव स्कूलों के विकास हेतु बनी संस्था का पत्र था। पहले बंगला में तथा बाद में हिन्दी में यह पत्र छपने लगा। यह पत्र सर्व सुलभ नहीं था, मात्र शिक्षालयों के लिए छपता था। समाचारपत्रों के मानदण्डों के अनुसार 'उदन्त मार्तण्ड' को ही प्रथम समाचारपत्र कहना समीचीन होगा।

हिन्दी पत्रकारिता के मनु श्री युगल किशोर सुकुल (शुक्ल) द्वारा संपादित-प्रकाशित पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' हिन्दी और हिन्दवासियों के हित के हेतु हितैषी था। सर्वप्रथम इसी पत्र ने 30 मई, 1826 ई. को लिखा-यह 'उदन्त मार्तण्ड' अब पहले पहल हिन्दुस्तानियों के हित के हेतु जो आज तक किसी ने नहीं चलाया पर अंग्रेजी और पारसी, बंगले में जो समाचार का कागज छपता है उसका सुख उन बोलियों के जानने और पढ़ने वालो को ही होता है ऐसी ऐसी बातों के विचार से नाना देश के सत्य समाचार हिन्दुस्तानी लोग देखकर आप पढ़ ओ समझलेंय ओ पराइ अपेक्षा ओ अपने भाषे के उपज न छोड़े'।

परतन्त्रता के अंधकार को मिटाने हेतु प्रकाश-स्रोत बनकर इस पत्र ने उद्‌घोषित किया-

'दिनकर कर प्रगटित दिनहिं यह प्रकाश अठयास।
ऐसो रवि अब उग्यों महि जेहि-जेहि सुख को धाम।।
उत कमलनि विकसित करत बढ़त चावचित वाम।
लेत नाम या पत्र को होत हर्ष अरू काम।।

लगभग डेढ़ वर्ष तक चलने वाले इस साप्ताहिक ने 4 दिसम्बर, 1827 ई. को अपना दम तोड़ दिया फलत: संपादक का कचोट अविस्मरणीय है-

'आज दिवस लों उग चुक्यो मार्तण्ड उदन्त।

अस्ताचल को जात है दिनकर दिन अब अन्त।।'

अंग्रेजी, बगला, फारसी और हिन्दी में एक साथ प्रकाशित होने वाले पत्र 'बंगदूत' का लक्ष्य देश-क्लेश को मिटाना ही था-

'दूतनि की यह रीति बहुत थोरे में भाषे।

लोगनि को बहु लाभ होय याही से लाखे।।

बंगला को दूत दूत यहि वायु को जानी।

होय विदित सब देश क्लेश को लेश न मानो।।'

राष्ट्रीय चेतना के अनिवार्य तत्व श्रुति-स्मृति के महत्व को पत्र ने बतलाया-'... वेदाध्ययनहीन मनुष्यों के स्वर्ग और मोक्ष होने शक्ता नहीं। '

'बंगदूत अखबार', 'प्रजामित्र', 'मार्तण्ड' एवं 'जगद्दीपक भास्कर' पत्रों की चर्चा यत्र-तत्र उपलब्ध है जिससे ज्ञात होता है कि राष्ट्र चेतना के बीजवपन में पत्रों की महत्वपूर्ण भूमिका थी।

बोध प्रश्न-2

1. मुद्रण-कला के पूर्व समाचारपत्रों के स्वरूप का वर्णन कीजिए।
2. प्रमुख राष्ट्रों के प्रारम्भिक समाचारपत्रों के नाम लिखिए।
3. भारत में प्रकाशित प्रथम समाचारपत्र कौन-सा था? संक्षिप्त परिचय दीजिए।
4. हिन्दी समाचारपत्रों के उद्भव एवं विकास पर प्रकाश डालिए।
5. आप के राज्य से प्रकाशित प्रमुख समाचारपत्रों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

1.4 समाचारपत्रों का विकास

1.4.1 विदेशों में समाचारपत्रों का प्रकाशन

'डेली न्यूज' (1846), 'डेली टेलीग्राफ' (1855), 'डेली स्टैन्डर्ड' (1885), 'मैनयेस्टर गार्जियन' (1891), 'न्यूज ऑफ द वर्ल्ड' (1843) आदि उन्नीसवीं शताब्दी के ब्रिटेन के मुख्य पत्र थे। अमेरिका से 'ट्रांसक्रिप्ट ' (1830), 'मार्निंगपोस्ट' (1831), 'न्यूयार्क' (1823), न्यूयार्क ट्रिब्यून' (1841) 'न्यूयार्क टाईम्स' (1851) का प्रकाशन हुआ। उन्नीसवी शताब्दी के अन्तिम दशक में पुलिट्जर और हर्स्ट जैसे पत्रकारों का आगमन विश्व की पत्रकारिता में उल्लेखनीय है। 'सेंट लुईस डिस्पेच, 'न्यूयार्क वर्ल्ड', सेन फ्रांसिस्को एक्लामिनर', 'सण्डे वर्ल्ड', 'द मार्निंग जनरल' ने अमेरिका की पत्रकारिता में पति शब्द जोड़ दिया।

आस्ट्रेलिया में 'सिडनी गजट' (1803), 'द आस्ट्रेलियन' (1824), 'सिडनी मोर्निंग हेराल्ड' (1831) का प्रकाशन हुआ।

अंगोला में 13 सितम्बर, 1845 ई. को 'बीलीटिम जीर्ल डा. प्रोविन्शया डी अंगोला का प्रकाशन हुआ। सन् 1886 में 'ए सिविलिजेका डा. अफ्रिका पोर्तुगुसा' निकला जिसने स्वतन्त्र प्रेस की वकालत की।'

2.4.2 भारत में पत्रों का विकास

मद्रास में सन् 1795 ई. में सेसर लागू किया गया। 'द मद्रास गजट' 'बंगाल जर्नल', 'इंडियन वर्ल्ड', 'बंगाल हरकारु' इसके शिकार हुए। 1799 ई. में एक नियम बनाया गया जिसके चलते पत्र पर मुद्रक, सम्पादक और पत्र स्वामी का नाम छापना अपेक्षित हो गया। फिर भी 'दिग्दर्शन', 'समाचार दर्पण' जैसे मिशनरी पत्र प्रकाशित हुए। संवाद कौमुदी, 'मिरातुल अखबार मुम्बई समाचार' के प्रकाशन के मूल राजाराम मोहन राय और जेम्स सिल्कबकिघम का हाथ था। 1857 ई. के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम के कुचले जाने और गैजिंग एक्ट इंडियन पेनल कोड के प्रभावी होने पर भी 'नील दर्पण', 'द हिन्दू, 'पैट्रियाट', 'सोमप्रकाश', 'इंडियन मिरर', 'अमृत बाजार पत्रिका' जैसे पत्र निकले। इसी अवधि में 'द बाम्बे टाइम्स', 'द कोरियर', 'द टाइम्स ऑफ इण्डिया' का उद्भव हुआ। 'द पायनियर', 'सिविल एण्ड मिलट्री गजट', 'द स्टेट्स मैन', 'द मेल', 'द हिन्दू भी प्रकाशित हुए। इसी अवधि में बंगाली, मराठी, पंजाबी, उर्दू, तमिल, गुजराती, कन्नड, मलयालम और हिन्दी के कई प्रमुख पत्रों ने जन-चेतना को जागृत करने का कार्य किया।

'वंदे मातरम्', 'केसरी', 'मराठी', "मित्रम्', 'अमृत बाजार पत्रिका', 'नेशनल हेराल्ड', 'द सिविल एण्ड मिलिट्री गजट', 'फ्री प्रेस जर्नल', 'बाम्बे क्रानिकल', 'द लीडर', 'द ट्रिब्यून', 'मद्रास', 'स्टेण्डर्ड', 'द हितवाद' जैसे उल्लेख पत्र प्रकाशित हुए। वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट, आफीसियल सीक्रेट एक्ट, डिफेंस ऑफ इंडियन रूल्स, प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन ऑफ बुक्स एक्ट जैसे अवरोधों के रहते हुए भी पत्र निकले।

सन् 1885 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना के समय 'द टिब्यून', 'केसरी' 'स्पेक्टैटर', 'इन्दु प्रकाश', 'मराठा', 'अमृत बाजार पत्रिका', 'द पायनियर', 'द बंगाली', 'द इंगलिश मैन', 'द हिन्दू', 'द हिन्दुस्तानी रिव्यू' और 'इंडियन रिव्यू' जैसे पत्र पाठकों के मध्य लोकप्रिय थे।

1.4.3 हिन्दी समाचारपत्रों की प्रगति

भारत में सन् 1826 से 1884 ई. तक प्रवृत्ति की दृष्टि से उद्बोधन काल रहा है। उद्बोधन काल राष्ट्र की आत्मा की चैतन्यावस्था है। शिक्षण संस्थानों की स्थापना, अंग्रेजी शिक्षा प्रसार, ब्रह्म समाज, प्रार्थना समाज एवं आर्य समाज के सामाजिक सुधार आन्दोलन, ईसाई धर्म की श्रेष्ठता की उद्घोषणा, प्रेस स्थापना, फिरंगी शासकों की शोषण -वृत्ति के कारम निद्रित, निश्चेष्ट भारतवासी उद्बुद्ध हुए। उद्भात नागरिक सचेष्ट हुए। 'समाचार सुधावर्षण', 'बंगदूत', 'बनारस अखबार', 'सुधाकर', 'पयामे आजादी', 'कवि वचन सुधा', 'श्री हरिश्चन्द्र चन्द्रिका', 'बाला बोधिनी', 'बिहार बन्धु', 'हिन्दी प्रदीप', 'भारत मित्र', 'उचित वक्ता', 'क्षत्रिय पत्रिका', 'ब्राह्मण' सदृश पत्रों ने भारत के निवासियों में नवजीवन शक्ति का संचार किया जिससे वे प्रबुद्ध होकर कर्त्तव्य पथ पर अग्रसारित हुए। 'सब धन लिहैजात अंग्रेज, हम केवल लेक्चर में तेज' प. तापनारायण मिश्र के इस कचोट पर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने लिखा ' भाइयो! अब तो सन्नद्ध हो जाओ और ताल ठोक के इनके सामने खड़े हो जाओ। देखो भारतवर्ष का धन देश में बाहर न जाने पाये, वह उपाय करो।

---

1. विस्तृत जानकारी के लिए 'एशिया में जनसंचार' इकाई 4 के अध्ययन करें ।

राजस्थान में लोक शिक्षण के निमित्त पत्रों का उद्‌गम हुआ। 1849 में भरतपुर से प्रकाशित मासिक पत्र 'मजहरूल सरूर' प्रारम्भिक पत्र था। बाद में पत्र जन चेतना से सम्बन्ध हुए। राजाओं को प्रेरणा और उनकी छत्र छाया में पनपी राजस्थान की पत्रकारिता ने शीघ्र ही भारत की प्राचीन गौरवमयी परम्पराओं का गुणगान करते हुए स्वतन्त्रता आन्दोलन से स्वयं को जोड़ लिया। जन-जागरण और स्वतन्त्रता का शंखनाद करने में राजस्थान की पत्रकारिता राष्ट्र की मुख्य जीवनधारा से जुड़ी रही। राजस्थान से निकलने वाले प्रारम्भिक पत्रों में 'राजपूताना अखबार ' या 'रोजतुल तालीम' (जयपुर 1856). 'जगलाभ चिन्तक (अजमेर 1861), 'मारवाड़ गजट' (जोधपुर 1966), 'जयपुर गजट' (1868), 'उदयपुर गजट' (उदयपुर 1869), 'देश हितैषी' (अजमेर 1862), 'सदाचार मार्तण्ड (जयपुर 1885) आदि उल्लेखनीय हैं। इनमें अधिकांश पत्र - पत्रिकाओं का मूल स्वर धार्मिक एवं सुधारवादी ही रहा।

'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्यवरान्निबोधन' के अनुरूग भारतेन्दु की प्रेरणा से 'डूबत भारत नाथ वेगि जागो' द्‌वारा भारत की युवा पीढ़ी इस समय जाग्रतावस्था में आई। जागरण की प्रक्रिया बहुमुखी बहुआयामी और सर्वव्यापी होती है। कांग्रेस की स्थापना, बंग- भंग आन्दोलन, माले-मिन्टो सुधार, दिल्ली दरबार, प्रथम विश्व युद्ध तथा जलिया वाला बाग हत्याकाण्ड ने स्वराष्ट्रभक्ति को सुपुष्ट किया। आत्म गौरव और आत्म विश्वास के जागरण के साथ ही भारतीयों में राष्ट्र प्रेम का स्फुरण हुआ। 'हिन्दोस्तान', 'भारत भ्राता', 'हिन्दी बंगवासी' ने भारतीय मनीषा को जगाया। हिन्दी जगत का प्रथम दैनिक 'हिन्दोस्तान' 1885 में कालाकांकर से निकला। इसके पहले अगस्त, 1883 में 'हिन्दोस्तान' इंग्लैण्ड से हिन्दी अंग्रेजी में निकला। बाद में यह उर्दू में भी छपने लगा। अंग्रेजी संस्करण के मुख्य नियामक जार्ज टैम्पल थे। नियमित रूप से मदनमोहन मालवीय के सम्पादन में यह पत्र नवम्बर, 1885 में प्रकाशित होने लगा। 'स्तयश्रमाम्यां सकलार्थसिद्धि ध्येय वाले हिन्दी के प्रथम दैनिक 'हिन्दोस्तान' ने प्रतापनारायण मिश्र, बाल मुकुन्द गुप्त, गोपाल राम गहमरी जैसे विभूति पत्रकारों को यशस्वी बनाया।

बोध प्रश्न - 3

1. सन् 1857 ई. से पूर्व प्रकाशित हिन्दी पत्रों का परिचय लिखिए।
2. राजस्थान से प्रकाशित प्रारम्भिक पत्रों का परिचय दीजिए।
3. हिन्दी के प्रथम दैनिक समाचारपत्र का विवरण लिखिए।
4. हिन्दी के राष्ट्रीय समाचारपत्रों पर प्रकाश डालिए।

1.5 वर्तमान समाचारपत्र

1.5.1 विदेशों में प्रकाशित समाचारपत्र

ब्रिटेन में सम्प्रति 'डेली एक्सप्रेस ', 'डेली मेल ', 'डेली मिरर ', 'डैली स्केच ', 'डेली वर्कर ', 'न्यूज क्रानिकल ', 'टाइम्स ', 'फाइनेंशियल टाइम्स ', 'मार्निंग एडवर्टाइजर ', 'द मार्जियन ', सदृश अनेक समाचारपत्र निकल रहे हैं, जिनकी प्रसार संख्या 40-50 लाख तक है। सांध्यकालीन पत्रों में 'ईवनिंग न्यूज ', 'स्टार ', 'ईवनिंग स्टैन्डर्ड ' प्रमुख हैं।

'न्यूयार्क टाइम्स ', 'न्यूयार्क पोस्ट ' 'वाशिंगटन पोस्ट, ' 'डेली न्यूज ', 'क्रिश्चियन साइन्स मानीटर ' जैसे पत्र अमेरिका की विकसित पत्रकारिता के उदाहरण है। पश्चिमी जर्मनी से प्रकाशित

'इलेस्ट्रेटिव न्यू रिव्यू, किक ', 'न्यू पोस्ट ', 'दास न्यू बैल ' तथा पूर्वी जर्मनी से प्रकाशित - 'न्यूज डीश्चलैण्ड ', 'डरे मोरगन ', 'न्यू जीट ', 'नेशनल जीलुंग ', 'बेयूरन इको ', ट्रिब्यून ', 'जुग बेल्ट ' पत्र सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों पर प्रकाश डाल रहे हैं।

जापान से प्रकाशित ' असाही शिबुन ', 'मनिची शिबुन', 'योमरी शिबुन ' लोकप्रिय पत्र हैं। पाकिस्तान के 'जंग ', 'डान', 'पाकिस्तान टाइम्स ', 'द मार्निग न्यूज ' समाचारपत्रों द्वारा राष्ट्र की गतिविधियों को प्रकाशित किया जा रहा है। स्वीडन से 'डेकिन्स नाइटर ', 'स्टाकहोम्स टिडनिनजेन ', 'एफ्टन ब्लेडिट ', 'स्विज डाट ब्लेडिट, साप्ताहिक पत्र 'वी, ' 'एरेतरिन्तु ' नामक पत्र अभिव्यक्ति स्वतन्त्रता के उन्नायक बने हुए हैं।

ब्रिटेन के 'द टाइम्स,' अमेरिका के 'न्यूयार्क टाइम्स ', 'वाशिंगटन पोस्ट ', 'पश्चिमी जर्मनी के 'डाईवेल्ट ', फ्रांस के 'ली मॉद ', इटली के 'कोरियरे डेलासिस ', सोवियत संघ के 'प्रावदा ', जापान के ' असाही शिबुन ' विश्व के अत्यन्त महत्वपूर्ण पत्र हैं। सम्प्रति समाचारपत्रों का सम्पूर्ण विश्व में प्रभुत्व है। प्रसार की दृष्टि से यूरोप अन्य महाद्वीपों से आगे हैं। अफ्रीका में कुछ ऐसे भी स्थान हैं जहाँ साक्षरता का अभाव, निर्धनता, अनुभवहीनता के चलते पत्र प्रकाशन प्रगति पर नहीं है। बर्मा और इंडोनेशिया के पत्र वहां की सरकार की कृपा-दृष्टि पर निर्भर हैं जबकि सिंगापुर, मलेशिया में पत्र उद्योगपतियों के हाथ में हैं।

1.5.2 भारत में समाचारपत्र

व्ययसाध्य संचार-साधनों एवं अत्याधुनिक मुद्रण तकनीक के विकास के फलस्वरूप समाचारपत्रों का प्रकाशन अब उद्योग हो चला है। समाचारों के संकलन, विश्लेषण, उपयोग, उत्पादन, विपणन की क्रियाओं से संयुक्त समाचारपत्र का कार्यालय अब प्रबन्ध -दर्शन का केन्द्र बन चुका है। वर्तमान जीवन के बहु आयामी विस्तार और विकास को दिग्दर्शित करने वाले पत्र हैं। पत्रों के विकास का यह काल प्रतिस्पर्द्धा और प्रतियोगिता की भावना से परिपूर्ण है। विविध रंग, रूप, प्रवृत्ति से युक्त होकर प्रमुख प्रकाशन संस्थानों से महत्वपूर्ण पत्र निकल रहे हैं।

बैनेट कोलमैन एण्ड कम्पनी लिमिटेड मुंबई द्वारा 'टाइम्स ऑफ इंडिया ', 'ईवनिंग न्यूज ऑफ इंडिया ', 'नव भारत टाइम्स ', 'इलस्ट्रेड वीकली ', ' धर्मयुग ', 'इकोनामिक टाइम्स ', 'महाराष्ट्र टाइम्स ', 'फिल्म फेयर ', 'फेमिना ', 'पराग ', 'साइंस टुडे ' जैसे पत्र प्रकाशित हो रहे हैं। हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन, दिल्ली के तत्वावधान में 'हिन्दुस्तान टाइम्स ', 'ईवनिंग न्यूज ',

'हिन्दुस्तान ', का प्रकाशन महत्वपूर्ण है। आनन्द बाजार पत्रिका लिमिटेड, कलकत्ता, द न्यूज पेपर्स एण्ड पब्लिशर्स लिमिटेड, पटना, हिन्दी समाचार लिमिटेड, जालंधर, राजस्थान पत्रिका प्रा. लिमिटेड, जयपुर, रतन मंडल लिमिटेड, काशी आदि प्रकाशन गृहों से भारतीय भाषाओं में पत्र निकल रहे हैं। 'पायनियर ', ' अमृत बाजार पत्रिका ', 'द स्टेट्समैन ', 'हिन्दू, 'द ट्रिब्यून ',

जैसे समृद्ध और विकसित समाचारपत्रों द्वारा जन-मन की आकांक्षाएँ अभिव्यक्त हो रही हैं।

1.5.3 स्वतन्त्रता संग्राम के हिन्दी समाचारपत्र

'नागरी नीरद ', 'जासूस ', 'सरस्वती ', 'राजशक्ति ', 'स्वदेश ', ' भारत मित्र ', ' भविष्य', 'अम्युदय ', 'प्रताप ', 'नवीन राजस्थान ', 'लोकवाणी ', 'विजय ', ' भारत बन्धु ' आदि पत्रों ने राष्ट्रीय अवधारणा को सर्वग्राह्य बनाया। उद्बुद्ध राष्ट्र को स्वतन्त्रता की प्राप्ति हेतु जागरूक बनाने

का पावन कार्य पत्रकारिता द्वारा सम्भव हुआ। महामना मालवीय, बालगंगाधर तिलक, बालमुकुन्द गुप्त, गणेश शंकर विद्यार्थी जैसे तेजस्वी पत्रकारों ने ' भारत के हम और हमारा भारत प्यारा, स्वतन्त्रता है जन्मसिद्ध अधिकार हमारा के मंत्र को जन -जन में प्रचारित किया।

सन् 1920 से 1947 ई. के मध्य महात्मा गाँधी के सक्षम नेतृत्व में भारतीय स्वतन्त्रता का संघर्ष तीव्र हुआ। जिसमें हिन्दी पत्र -पत्रिकाओं की भूमिका अविस्मरणीय है। ' आज ', ' भविष्य ', 'प्रताप ', 'प्रभा, 'वर्तमान ', 'चांद ', 'माधुरी ', 'सैनिक '. 'समय ', 'हंस ', 'सुधा ' आदि अनेक पत्रों ने सोहनलाल द्विवेदी के स्वर को सार्थक किया-

मैं महाक्रान्तिकारी कराल।
मैं क्रुद्ध रंगा हूँ एक रंग
मैं रुद्ध करूँगा नियम भंग
मैं अग्निशिखा हूँ लाल -लाल।

असहयोग आन्दोलन, चौरी चौरा काण्ड, साइमन कमीशन, सविनय अवज्ञा आन्दोलन तथा भारत छोड़ो आन्दोलन जैसी क्रान्तिकारी प्रवृत्ति के मूल में गाँधी जी थे, जिनको राष्ट्रोंद्वार का अग्रदूत माना गया है। स्वाधीनता संग्राम को दैनिक, साप्ताहिक, मासिक पत्रों ने गति दी तथा विभिन्न परचे, बुकलेट एवं अनियतकालीन प्रकाशनों ने फिरंगियों को ललकारा। अकेले उत्तर प्रदेश अभिलेखागार की पुलिस फाइलों से ज्ञात हुआ कि 1920 - 22 में 121 प्रकाशनों पर प्रतिबंध लगा। 'पंजाब का खून ', 'बन्देमातरम्', 'फिरंगिया, 'भारत-दुर्दशा-दर्शन ', 'गाँधी प्रताप ', 'वीर भारत', 'महात्मागाँधी की जय ' सुदर्शन चक्र ', 'स्वदेश-राग ', 'तरगिणी ', 'स्वराज्य का डंका ' आदि प्रकाशनों ने स्वतन्त्रता संग्राम को गति दी। ब्रिटिश साम्राज्यवाद के दमन-चक्र को चुनौती देने में 'रणभेरी ', 'शंखनाद ', 'बवण्डर ', 'खड़का ', 'गदर ', 'बगावत ', 'बदमाश अंग्रेज सरकार जैसे भूमिगत प्रकाशन उल्लेख्य हैं।

'गदर' के प्रथमांक में छपे क्रान्तिकारी करतार सिंह की कविता ने उत्सर्ग का तराना लहराया : -

जो पूछे कि कौन हो तुम, तो कह दो बागी है नाम अपना।
जुल्म मिटाना हमारा पेशा, गदर करना है काम अपना।।

हिन्दी के समाचारपत्रों ने गोरी सरकार को बाध्य कर दिया कि अब वे भारत की धरती से कूच कर जाएँ। पत्रों की अग्नि वर्षा से विदेशी जाने को विवश हो गए।

1.5.4 स्वातंत्र्योत्तर भारत के हिन्दी -समाचारपत्र

आजादी के बाद पत्रकारिता व्यक्ति, समाज और राष्ट्र के नव-निर्माण के प्रति प्रतिबद्ध हुई। उद्बोधन, जागरम, क्रान्ति के पश्चात् पत्र -पाठकों को नए व्यक्तित्व-निर्माण की प्रेरणा देना उनकी रुचि संस्कारित करना, आर्थिक वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी के विकास के साथ जन-जन को जोड़ने के सभी कार्य हिन्दी पत्रों द्वारा सम्पादित हुए। राष्ट्र के नव-निर्माण हेतु तेज पुंज पत्रकारों की परम्परा ने राजनेताओं का पथ प्रदर्शन किया। युग पुरुष नेहरू ने करोड़ों निरन्न, निवस्र, निर्वाक् नागरिकों के उद्धार की बात कही और गाँधी के स्वप्न के अनुरूप आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु उन्होंने ठोस सृजनात्मक योजनाएँ चलायीं।

'आज जीत की रात पहरुए सावधान ' द्वारा गिरिजा कुमार माथुर ने हमें दायित्व बोध से परिचित कराया तो वहीं 'गाँव -गाँव पतार को हम भू-स्वर्ग बनायेंगे ' की प्रतिज्ञा नागार्जुन ने दोहरायी। राष्ट्र कवि माखनलाल चतुर्वेदी ने 'मस्तक में दायित्व ', हृदय में बज्र, दृगों में ज्वाला ' का आह्वान किया ताकि भारत पुन : अपने पूर्व गौरव को प्राप्त कर सके। नया आत्मबोध, नई चिन्तन धारा, नूतन रचनात्मक तत्वों के व्यापर प्रचार-प्रसार द्वारा इस काल की पत्र -पत्रिकाओं ने गतानुगतिकता से आबद्ध संकीर्ण मनोभूमि में बौद्धिक क्रान्ति का शंखनाद किया। जन -मन की जड़ता टूटी तथा इस नवीनीकरण प्रक्रिया के सक्षम माध्यम के रूप में हिन्दी पत्रकारिता को प्रतिष्ठित किया गया। नव निर्माण काल की पत्रकारिता अपनी व्यापक गहनता, परिवेश के संघर्ष-संघात की अभिव्यक्ति, संचार साधनों की बहुलता, साहित्यिक वैविध्य एवं कलात्मक परिपक्कता के कारण स्वर्ण सदृश मनोरम और मूल्यवान हुई इसीलिए इस काल-खण्ड की हिन्दी पत्रकारिता का 'स्वर्ण काल ' कहा जाए तो उत्तम है।

अब बहुविध रस-गन्ध वाली पत्रकारिता विषय वस्तु, शिल्प, दृष्टिबोध के कारण बहुद्देशीय हो चली है। भावुकता के स्थान पर व्यावसायिक बुद्धि, व्यापारिक अनुभव और व्यावहांरिक चातुर्य से पूर्ण अब पत्रकारिता उद्यम हो चली है। मानवीय मूल्य और आदर्श तो प्रौद्योगिकी के शिकार हैं। सर्वत्र बाजार लगा है, चीजें खरीदी-बेची जा रही है। पत्रकारिता भी उपभोक्ता बाजार की वस्तु है। जो पूँजी लगाता है वह मुनाफा चाहेगा ही फलत : सैक्स, हत्या, डकैती, बलात्कार सम्पृक्त सनसनी बेचना उसकी बाध्यता है। आश्चर्य, भय, आतंक, घृणा उत्पन्न करने वाले समाचारपत्र अपने वैचारिक खोखलेपन और व्यावसायिकता के चलते अपनी अस्मिता पर प्रश्न चिन्ह लगा रहे हैं।

1.5.5 साम्प्रतिक समाचारों की प्रवृत्ति

कस्बो, छोटे नगरों से प्रकाशित पत्र साधन में लघु तो होते ही है उनकी मनोवृत्ति भी सीमित होती है। पत्र स्थानीय संघर्ष में शामिल होकर पक्षधर बन जाते हैं। अराजकता, मूल्यहीनता और भौतिकता की आँधी ने सामाजिक दायित्व बोध की हत्या कर दी है। पत्रकारिता द्वारा 'युग-चर्वण ' का कार्य हो रहा है, पीत, शीत, मीत, नवगीत, क्रीत पत्रकारिता का प्रचलन बढ़ रहा है। पत्र जगत में संयम की जगह प्रलोभन और विज्ञापन का बोलबाला है। फलत : पत्रकारिता सूचना और मनोरंजन का उद्योग है।

जिन हिन्दी पत्रों ने चेतना का संचार किया वे ही कुछ अंशों में चेतना-हनन का निर्द्वन्द्व माध्यम बन चुके हैं। 'मिशन ' के स्थान पर अब पत्रकारिता 'मशीन ' बन गई है। 'प्रोफेशन ' से आगे बढ़कर हिन्दी पत्रकारिता 'सेन्सेसन ' की ओर भागी जा रही है। जीवन जगत के अर्न्तसूत्रों को जोड़ने के बजाए पत्रों द्वारा उन्हें तोड़ने का कार्य हो रहा है।

सम्प्रति बाजारों में बेजान, नीरस हास्यास्पद और उबाऊ पत्रों को ढेरी लगी है। उन पत्रों में विज्ञापन के अतिरिक्त सभी सामग्री बासी ही होती है। मात्र पत्रों का नाम ही लिखा जाएँ तो इसके लिए स्वतन्त्र बृहद्काय ग्रन्थ प्रकाशित करना होगा। ऐसी स्थिति में भी कुछ इन - गिने पत्र हैं जो विश्व की गतिविधियों से सम्बद्ध हैं। नई प्रेरणा, नए बोध,' नए तेवर, नए कलेवर ने नए -नए स्तम्भ, अछूते विचार वाले ऐसे पत्र हिन्दी पाठकों हेतु कंठहार अँभ हुए हैं। आकर्षक मुद्रण एवं साज -सज्जा में ये सभी पत्र विविध विषयों पर अधिक व्यापक, गहन और अन्तर्भेदी

सामग्री दे रहे हैं। बदलते वक्त की सही पहचान हेतु ऐसे पत्रों का अवगाहन अपरिहार्य हो जाता है। आज के हिन्दी पत्र महत्वपूर्ण समाचार और विचार के दर्पण है, पाठकों हेतु प्रेरक है। वे अपनी धती से जुडे हैं। हर आयु, वर्ग और स्तर के पाठकों की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को पूरी करते हैं। उसमें समाचार, विचार, अर्थ, राजनीति, विज्ञान, कृषि, उद्योग, कला, नाटक, फिल्म, साहित्य फैशन, स्वास्थ्य सम्बन्धी उपयोगी सामग्री का खजाना भरा रहता है।

वर्तमान की पत्र-पत्रिकाएँ नित नये आयाम की तलाश करती रहती हैं। दुर्गम से दुर्गम क्षेत्र से खबर खोजकर लाना, खबर की तह में बैठकर सत्य का उद्घाटन करना उनकी प्रवृत्ति है। संवेदनशील, जीवन्त प्रभावकारी खोजी पत्रकारिता जासूसी तेवर वाली है जो अपनी महाचेतना को सामर्थ्य से दूरगामी परिणाम देती है। इसके विपरीत मीडिया का मन्तव्य सनसनी फैलाना भी हो गया है। विकट हालात में भी मीडिया आन्तरिक जीवन में झाँककर 'गासिप ' तलाश रहा है। सभी बुक स्टाल नारी की कामुक मुद्रा से सजे हैं। काले-पीले का रोजगार खूब फल -फूल रहा है। नारी को सेक्स का धमाका बनाया जा रहा है। संस्कृति के खुलेपन के नाम पर रंगीन उत्तेजना का व्यवसाय चल रहा है।

जन-हित के प्रहरी पत्र शासक को झकझोरते हैं, उन्हें नाराज करते हैं, उनकी नींद हराम होती है फलत: पत्रकारों का एक वर्ग संत्रस्त है। कहीं-कहीं पत्रकारों की हैसियत एक बन्धुआ मजदूरों की तरह है, वे किसी की कठपुतली हैं। पत्र - मालिकों के नुकसान की चिन्ता तथा अन्ध विश्वासों में जनता की अनुरक्ति के कारण पत्रकारों की स्वतन्त्रता बाधित होती है। 'जागते रहो ' का मंत्रदाता आज स्वयं किंकर्त्तव्यविमूढ़ है कि अपनी ही बिरादरी के बहुरूपिए गिरोह से कैसे निपटा जाएं? स्कूटर, टैक्सी के आगे 'प्रेस ' की तख्तियाँ लटकाएँ, जमीन जायदाद हथियाते-बिकवाते, शासकों को घुड़काते उनकी चिरौरी करते यह वर्ग पत्रकारोचित सुविधाओं का लाभ उठा रहा है। पत्र-प्रकाशन उनके लिए सत्ता पाने की सनक है। 'जो हमसे टकराएगा, खबर नहीं बन पायेगा ' की धारणा वाले पत्रकार अपनी महत्वाकांक्षा में हांफता, हिनहिनाता, गाज फैंकता अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर भागे जा रहा है। ऐसी स्थिति में लोकपाल, प्रेस परिषद् द्वारा खबरों के तोड़ने मरोड़ने, दबाने, गढ़ने और उछालने पर अंकुश लगाना उपयुक्त है। आज के पत्रकारों को समझना चाहिए कि पत्रकारिता एक पावन अनुष्ठान है जिसमें समाज के प्रति शुभेच्छु सहृदय की भूमिका ही वरेण्य होती है। कर्म के नैतिक आधारों की अनुपस्थिति में पत्रकार सम्मानित नहीं होता। आत्म निरीक्षण, आत्म नियंत्रण और आत्म गौरव के विकास से ही पत्रकार सम्मानित होगा और उसकी पत्रकारिता गौरव से दीप्त होगी। मूल्यों पर निर्मम प्रहार से मुक्त हिन्दी पत्रकारों को अपनी उज्ज्वल परम्परा से जुड़ना होगा और लोकनायक की भूमिका निभानी होगी।

सम्प्रति भारतीय भाषाओं के पत्रों की पैठ जितनी गहरी और पैनी है अंग्रेजी पत्रों की नहीं है। फिर भी अपने यहाँ अंग्रेजी पत्रकारिता 'मुख्य धारा' की पत्रकारिता के रूप में समलंकृत है। आँकड़े बतलाते हैं कि पत्र-पाठकों में मात्र तीन प्रतिशत ही अंग्रेजी के पाठक हैं और शेष अन्य भाषा के पाठक हैं। संवेदना के धरातल पर भाषायी पत्र समाज और राष्ट्र से जुड़े हैं परन्तु हम उन्हें मुख्यधारा में नहीं गिनते। अंग्रेजी की प्रमुखता के पीछे दो सौ वर्षों की ब्रिटिश दासता वाली मनोवृत्ति है। परतंत्र भारंत में अंग्रेजी शासकों की भाषा थी, स्वतन्त्रता के बाद वह नौकरशाही की भाषा बन बैठी। अंग्रेजी का पाठक शहरी है जो नब्बे करोड़ पर निर्णय लेने और उसे थोपने के लिए स्वतन्त्र है। विचारणीय तथ्य है कि स्वतन्त्र राष्ट्र में अपनी राष्ट्रवाणी हिन्दी की पत्रकारिता

क्षेत्रीय पत्रकारिता के रूप में ही कब तक गिनी जाएगी? वस्तुत : हिन्दी पत्र-जगत ही प्रमुख है, यही मुख्य धारा का प्राण तत्व है। जीवन, जगत और जिज्ञासा के अन्तर्सूत्रों को जोड़ने वाले यही हिन्दी पत्र हैं जो अपने अद्यतन प्रयोगों, अध्ययनों, विश्लेषणों के कारण अभिव्यक्ति का सम्पूर्ण विज्ञान बन चुके है।

बोध प्रश्न- 4

1. बीसवीं सदी के प्रमुख भारतीय समाचारपत्रों के नाम लिखिए।
2. स्वतन्त्रता संग्राम में हिन्दी पत्रों की भूमिका का वर्णन कीजिए।
3. आजकल के समाचारपत्रों की विशिष्टताओं का उल्लेख कीजिए।
4. समाचारपत्रों में इंटरनेट, 'उपग्रह ' की भूमिका पर प्रकाश डालिए।

1.6 सारांश

जन- भावना का मुखर वक्ता समाचारपत्र होता है। मुद्रणकला के विकास के साथ ही सम्पूर्ण विश्व में समाचारपत्रों का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। 'द टाइम्स ', 'न्यूयार्क टाइम्स, 'प्रावदा', 'वशिंगटन पोस्ट', 'ली मांद', 'असाही शिबुन', 'हिन्दुस्तान', 'नवभारत टाइम्स', 'आज', 'जागरण', 'राजस्थान पत्रिका' जैसे समाचार पत्रों से समाज- शिक्षा, राष्ट्र- सेवा का कार्य हो रहा है।

संचार क्रान्ति के इस युग में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का प्रमुखतः दृष्टिगत हैं परन्तु रचनात्मक संकल्पों के साथ विश्व में समाचारपत्र अग्रसन् है। प्रामाणिक जानकारी एवं सतत चैतन्य दृष्टि के लिए आज सभी की निगाहें समाचारपत्रों पर ही टिकी हैं। अपने उद्भव और विकास के साथ समाचारपत्रों ने मानवता की बहुमुखी सेवा की है जो सदैव अविस्मरणीय है। आज भी पत्रों द्वारा जन- जन के लिए प्रगति का द्वार प्रशस्त किया जा रहा है जो 21वीं सदी की अनिवार्यता है। समाचारपत्रों का महत्व सदैव बना रहेगा, क्योंकि वह लिखित दस्तावेज है।

1.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

हिन्दी पत्रकारिता : विविध आयाम -डॉ. वेद प्रताप वैदिक

हिन्दी पत्रकारिता का आलोचनात्मक इतिहास-डॉ. रमेश जैन

हिन्दी पत्रकारिता का बृहद् इतिहास -डॉ. अर्जुन तिवारी

स्वतन्त्रता आन्दोलन और हिन्दी पत्रकारिता-डॉ. अर्जुन तिवारी

वृहद् हिन्दी पत्रकारिता कोश-डॉ. प्रताप नरायण टंडन

हिन्दी पत्रकारिता और राष्ट्रीय एकता-डॉ. हरि मोहन

हिन्दी विज्ञान पत्रकारिता-डॉ. मनोज कुमार पैटरिया

1.8 निबन्धात्क प्रश्न

1. समाचारपत्रों के उद्गंम और विकास पर प्रकाश डालिए।
2. आजादी के पूर्व भारत के हिन्दी समाचारपत्रों के विकास पर एक लेख लिखिए।
3. भारत में प्रकाशित हो रहे वर्तमान हिन्दी समाचारपत्रों की दशा-दिशा पर टिप्पणी लिखिए।
4. 'समाचारपत्रों का महत्व सदैव बना रहेगा ' इस कथन पर अपने विचार लिखिए।
5. 'इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ' का समाचारपत्रों पर क्या प्रभाव पड़ा है? विवेचना कीजिए।

इकाई 2 अन्तर्राष्ट्रीय समाचार - जगत्

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2.1 अन्तर्राष्ट्रीय समाचार जगत् : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2.2.2 दैनिक समाचार पत्र और उनका प्रसार

2.2.3 विभिन्न सूचना माध्यमों के विकास की जरूरी शर्तें

2.3 अन्तर्राष्ट्रीय समाचार समितियाँ

2.3.1 यूनेस्को के प्रयास

2.4 प्रसारण माध्यम के रूप में रेडियो एवं टेलीविजन

2.4.1 नियंत्रण एवं स्वामित्व के तौर तरीके

2.5 अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में सूचना-राजनीति

2.5.1 माध्यमों की भूमिका का परिदृश्य

2.5.2 संचार और विकास

2.5.3 अमेरिका में जनसंचार माध्यमों की विशिष्ट प्रणाली

2.6 संयुक्त राष्ट्र संघ एवं अन्य एजेन्सियों के प्रयास

2.6.1 सूचना के सम्बन्ध में संयुक्त राष्ट्र की भूमिका

2.6.1 अंतरिक्ष में सूचना प्रवाह का प्रश्न

2.7 यूनेस्को के प्रयास

2.8 गुटनिरपेक्ष आन्दोलन के विकास पर बल

2.9 गुट निरपेक्ष देशों की समाचार -समितियों के 'पूल ' का निर्माण

2.9.1 दिल्ली सम्मेलन

2.10 सारांश

2.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.12 निबंधात्मक प्रश्न

2.0 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई 'अन्तर्राष्ट्रीय समाचार जगत् ' की है। इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप अन्तर्राष्ट्रीय समाचार- जगत् की ऐतिहासिक एवं समसामयिक स्थिति से परिचित हो सकेंगे तथा आप -

- बीसवीं सदी के अन्तिम दशक से पूर्व के अन्तर्राष्ट्रीय प्रेस जगत के प्रसार एवं विभिन्न देशों के समाचारपत्रों के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- समाचारपत्रों के स्वामित्व एवं नियंत्रण के बारे में भी आप समझ सकेंगे।
- रेडियो, दूरदर्शन आदि इलेक्ट्रोनिक माध्यमों के परिदृश्य से भी परिचित हो सकेंगे।
- आप यह भी जान सकेंगे कि विश्व में सूचना-तन्त्र की दशा-दिशा की रूप-रेखा क्या है?

- यूनेस्को की विश्व समाचारपत्रों एवं विभिन्न माध्यमों के संदर्भ में भूमिका को स्पष्ट कर सकेंगे।

2.1 प्रस्तावना

इस इकाई में विश्व समाचार जगत् का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, अन्तर्राष्ट्रीय समाचारपत्रों एवं माध्यमों का विकास, यूनेस्को की भूमिका, विश्व में प्रेस का नियंत्रण, प्रेस परिषदों की भूमिका, प्रेस -कानूनों आदि की विवेचना की गई है। प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप भारतीय समाचार जगत् के संदर्भ में भी एक तुलनात्मक जानकारी दे सकेंगे। समाचार जगत् के बारे में विभिन्न देशों के विचारों और कार्य पद्धति का अध्ययन करके आप आज के बदले हुए तथा सूचना टेक्नोलॉजी के विकास के कारण करीब आए दुनिया के अन्य देशों की प्रेस की खूबियों को पहचान सकेंगे। साथ ही आप इसकी भूमिका को बेहतर ढंग से प्रतिपादित कर सकेंगे।

2.2 अन्तर्राष्ट्रीय समाचार जगत् : ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

समाचार जगत् या प्रेस को राज्य का चौथा-स्तम्भ माना गया है। लेकिन विधायिका, कार्यपालिका एवं न्यायपालिका की तुलना में यह सबसे नया और आयु में छोटा-स्तम्भ है। इसका तात्पर्य यह है कि समाचार-जगत् को राज्य के विभिन्न स्तम्भों की तुलना में बहुत देरी से एक प्रमुख स्तम्भ के रूप में पहचाना गया। यूरोप में सबसे पहले समाचारपत्रों का प्रादुर्भाव जर्मनी में हुआ। जर्मनी का पहला समाचारपत्र "Avisa Relation oder Zeitung" वर्ष 1609 में प्रकाशित होने लगा है। इसके बाद यूरोप में समाचार दैनिक समाचारपत्रों का प्रचलन तो 20वीं सदी के आरम्भिक सालों में ही सम्भव हुआ। समाचारपत्रों के विकास क्रम में सबसे बड़ा योग दिया मुद्रण-कला और संचार टेकनोलॉजी के विकास ने। इसके अलावा, समाचार या संवाद समितियों की स्थापना और साक्षरता प्रसार ने भी दैनिक एवं अन्य समाचारपत्रों को गति दी। उनके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया।

प्रथम विश्व युद्ध के तत्काल बाद का समय विश्व-प्रेस के लिए स्वर्णकाल माना जाता है। एशिया और अफ्रीका के नव-स्वतन्त्रता प्राप्त देशों में समाचारपत्रों का विस्तार हुआ। समाचारपत्र जगत में द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद विकास की गति धीमी पड़ गई क्योंकि समाचारपत्रों के प्रकाशन की अर्थव्यवस्था बदलने लगी थी और आर्थिक दृष्टि से कमजोर समाचारपत्र बन्द होने लगे थे। इसके बाद विश्व-प्रेस या अन्तर्राष्ट्रीय प्रेस जगत् को एक और झटका उस समय लगा जबकि इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के आगमन से पत्रों के पाठकों एवं आय दोनों में कमी आई। यह 1950 एवं 1960 के दशकों का समय था। यद्यपि इसके बाद 1970 के दशक में समाचारपत्रों की गिरती दशा को एक विराम मिला। लेकिन विश्व-प्रेस अपना वर्चस्व कायम नहीं कर पाया। कम्प्यूटर टेकनोलॉजी एवं ऑफसेट मुद्रण प्रणाली के आगमन, दुनिया के कई देशों को स्वतन्त्रता मिल जाने, साक्षरता में वृद्धि होने तथा इलेक्ट्रानिक या श्रव्य-दृश्य संचार माध्यमों की तुलना में मुद्रित समाचारपत्रों की अपनी अलग विशेषताओं के कारण प्रतिस्पर्धा के बावजूद दुनिया के समाचारपत्रों के आकार एवं प्रसार में वृद्धि अंकित की गई। यह वृद्धि का दौर 1980 के बाद शुरू हुआ और प्रतिस्पर्धा का सामना करते हुए विश्व-प्रेस फिर दृढ़ता से अपने अस्तित्व को कायम रखने में सफल हुआ।

2.2.1 दैनिक समाचारपत्र और उनका प्रसार

यूनेस्को के आंकड़ों के अनुसार सन् 1969 में दुनिया के 146 देशों में 7680 दैनिक समाचारपत्रों का प्रकाशन होता था जो बढ़कर 1978 में 8,210 हो गया। यह संख्या 156 देशों में प्रकाशित होने वाले दैनिकों की है। इस प्रकार दस वर्ष की अवधि में मात्र 530 समाचारपत्रों की वृद्धि हुई। दैनिक समाचारपत्रों की बढ़ने की गति की तरह ही प्रसार - संख्या में बढ़ोतरी के आंकड़े भी उत्साहजनक रहे। इन समाचारपत्रों की प्रसार-संख्या 1978 में सर्वाधिक ऊँचाई पर पहुँची अर्थात् 443 मिलियन हो गई। लेकिन इस समय तक दुनिया में ऐसे 28 देश थे, जिनमें एक भी समाचारपत्र नहीं छपते था। हालांकि हर देश में किसी न किसी प्रकार के समाचारपत्र निकलने लगे थे। दैनिक समाचारपत्रों में सबसे अधिक प्रसार -संख्या वाले समाचारपत्र दस बड़े देशों में छपते थे। इन दस देशों के समाचारपत्रों के प्रसार का हिस्सा, दुनिया के पत्रों की कुल प्रसार-संख्या का 63 प्रतिशत था। इनमें सबसे अधिक समाचारपत्रों का प्रकाशन संयुक्त राज्य अमेरिका से होता था। इस प्रकार अमेरिका दैनिक समाचारपत्रों के प्रकाशन के लिहाज से 1978 में दुनिया में पहले नम्बर का देश था।

भारत साक्षरता और शिक्षा के क्षेत्र में पीछे होते हुए भी दैनिक समाचारपत्रों के प्रकाशन की दृष्टि से दुनिया क दूसरे नम्बर का देश था। 1978 में भारत में दैनिक पत्रों की संख्या 835 थी। सोवियत रूप में 691 दैनिक थे और उसका स्थान इस लिहाज से तीसरा था। चौथे स्थान पर 434 दैनिक वाले टर्की का नाम था। समाचारपत्रों के प्रकाश की यात्रा में पहला कदम उठाने वाले जर्मनी का पांचवां स्थान था और वहाँ 334 दैनिक पत्र प्रकाशित होते थे। ब्राजील में 280, मेक्सिको में 256, जापान में 180, इण्डोनेशिया में 172 तथा अर्जेन्टीना में 164 दैनिक का प्रकाशन होता था। दैनिक पत्रों की प्रसार संख्या के सन्दर्भ में सोवियत रूस का पहला स्थान था तथा सर्वाधिक समाचारपत्रों का प्रकशन करने वाले अमेरिका का दूसरा स्थान था। उस समय रूस के 691 अखबारों का प्रसार 10 करोड़, 92 लाख, 8 हजार था जबकि अमेरिका के 1815 समाचारपत्रों का प्रसार 6 करोड़ 12 लाख 22 हजार था। जापान तीसरे स्थान पर था। वहां के दैनिकों की प्रसार संख्या 5 करोड़ 78 लाख 20 हजार थी। इंग्लैण्ड की गिनती यद्यपि दुनिया के 10 सर्वाधिक संख्या वाले दैनिक-पत्रों के देश में नहीं थी लेकिन वहां के समाचारपत्रों का प्रसार 2 करोड़ 17 लाख था और इसलिए प्रसार संख्या के स्तर पर इंग्लैण्ड का स्थान चौथा था। पश्चिमी जर्मनी और फ्रांस क्रमश : एक करोड़ 29 लाख 8 हजार एवं एक करोड़ 13 लाख 31 हजार के आकड़ों के साथ पांचवें एवं छठे स्थान पर थे। दैनिक पत्रों की संख्या के स्तर पर दूसरे नम्बर के देश-भारत के समाचारपत्रों की प्रसार संख्या कम थी और 93 लाख, 83 हजार की प्रसार संख्या के साथ इस सन्दर्भ में भारत सातवें स्थान पर था। इसके बाद पोलैण्ड, इटली और दक्षिण कोरिया के समाचारपत्र, आठवें, नवें और दसवें स्थान पर थे। दुनिया में अन्य तीस देश ऐसे थे जहाँ समाचारपत्रों का प्रसार प्रति एक हजार लोगों के बीच मात्र 10 था। 'सूचना-गरीबी -स्तर ' अर्थात् समाचारपत्रों की पहुंच और प्रसार के स्तर पर सर्वाधिक कमजोर अधिक देश थे।

इस तुलनात्मक विश्लेषण से यह नतीजा भी सामने आया है कि दुनिया के आर्थिक दृष्टि से विकासशील या पिछड़े देशों की तुलना में विकसित देशों के समाचारपत्रों का प्रसार अधिक रहा है। इसका तात्पर्य यह भी है कि आर्थिक पिछड़ापन, असाक्षरता, गरीबी आदि के कारण विभिन्न

माध्यम भी विकसित या कम विकसित रहते हैं। एक स्वस्थ सूचनात्मक या विभिन्न माध्यमों का विकास भी एक स्वस्थ आर्थिक अवस्था वाले देश में सम्भव है।

2.2.2 विभिन्न सूचना माध्यमों के विकास की जरूरी शर्तें

दैनिक समाचारपत्रों, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों आदि के विकास के लिए यह आवश्यक है कि आवश्यक ढांचागत सुविधाएं भी विकसित हों या पर्याप्त रूप से उपलब्ध हों। साथ ही साक्षरता की दर कम से कम 25 प्रतिशत हो, मुद्रण उपकरणों, मुद्रण के लिए कागज, संचार की उपयुक्त सुविधाएं, पत्रकारों के लिए विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षण व्यवस्था तथा समाचारपत्रों के वितरण हेतु उपयुक्त वितरण, विकास, नेटवर्क आदि का एक उपयुक्त ढांचा तैयार करना एक भारी काम है। इसमें काफी पूंजी नियोजन करने के अलावा विकास की राह पर चलने वाले देशों की अपनी परिस्थितियों के अनुसार प्राथमिकताओं का प्रश्न भी अहम है। दुनिया के 25 प्रतिशत से भी अधिक दैनिक समाचारपत्र अंग्रेजी में छपते हैं। दूसरे स्थान पर चीनी भाषा है। इसके बाद जर्मन और स्पेनिश का स्थान है। अधिकांश देशों में दैनिक पत्रों की पृष्ठ संख्या के हिसाब से छोटे आकार में है जिनमें 4 से 6 पृष्ठ प्रति अंक में मिलते हैं। केवल दुनिया के 25 देश ही ऐसे हैं जहां दैनिक- पत्रों की प्रति अंक पृष्ठ संख्या 12 या इससे अधिक होती है।

2.3 अन्तर्राष्ट्रीय समाचार समितियां

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में आंकड़े हर स्तर पर बदलते रहते हैं। चाहे वे दैनिक या अन्य समाचारपत्रों की संख्या, प्रसार संख्या या समाचार -समितियों की संस्था से सम्बन्धित हो किसी अन्य पक्ष का सन्दर्भ हो लेकिन एक विशेष बिन्दु पर विश्व-पत्रकारिता या विभिन्न समाचार-माध्यमों की स्थिति, दशा और दिशा का संकेत देते हैं। कुछ मौलिक अवधारणाओं से आपको परिचय कराते हैं।

अत : बीसवीं सदी के अन्तिम कुछ वर्षों तक दैनिक समाचारपत्रों के विकासक्रम में उन की संख्या और प्रसार संख्या से संबंधित विभिन्न पक्षों की चर्चा के बाद समाचारपत्रों के स्रोत या सूचनाओं के आदान -प्रदान के बारे में विश्व-व्यवस्था की जानकारी करना भी आवश्यक है।

समाचारों के आदान -प्रदान की प्रक्रिया दो तरफा होती है और इस प्रक्रिया का त्वरित -प्रवाह की समाचारपत्रों की खास प्रक्रिया है। समाचार-समितियां, समाचारों के प्रवाह को नियमित करती हैं। सन् 1980 में दुनिया के 93 देशों में 174 समितियां या न्यूज एजेन्सियां कार्यरत थीं। 80 देश ऐसे थे जिनके यहां समाचार -समितियां नहीं थीं। संचार -समितियां केवल समाचारपत्रों को ही समाचार नहीं भेजतीं बल्कि इनकी समाचार -सेवा, फीचर सेवा, छाया सेवा, टी.वी. या रेडियो के लिए समाचार या सामग्री उपलब्ध कराने के लिए सेवाएं भी उपलब्ध कराती हैं।

विश्व के 50 देशों की संवाद समितियों का सीधा नियंत्रण एवं संचालन उन देशों की सरकार के अधीन है जबकि बाकी के देशों में समाचार-समितियों का नियन्त्रण एवं संचालन विभिन्न माध्यमों, सहकारी संस्थाओं, स्वशासी संस्थाओं या निगमों के द्वारा किया जाता है। सरकारी नियन्त्रण की तुलना में समाचार- समितियों का सरकार से मुक्त रहना बेहतर है क्योंकि समाचार-समितियों के सरकार के नियन्त्रण में रहने से वे मात्र सूचनाएं देने का स्रोत बनकर रह जाती है और अपने दायित्वों का निर्वाह पूरी तरह नहीं कर पातीं। एक जनतांत्रिक शासन प्रणाली की सफलता का आधार मुख्य समाचारपत्र संवाद समितियां और माध्यम बन सकते हैं। समाचारों

की स्वतन्त्रता को मौलिक अधिकार के रूप में माना गया है और समाचारपत्र एवं विभिन्न माध्यमों को आजादी का प्रहरी माना गया है। राज्य का यह एक स्वतन्त्र स्तम्भ है जिस पर उसका ढांचा खड़ा होता है।

समाचारों के अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में एकत्रित करने तथा प्रसारण करने के स्तर तथा क्षमता के आधार पर लगभग 20 समाचार एजेन्सियां बड़ी मानी जाती हैं। टेकनोलॉजी विकास और प्रसारण- क्षमता के कारण ए.पी., यू.पी. आई., रॉयटर, ए.एफ.पी. और तांस, ये पांच बहुत बड़ी एजेन्सियां मानी जाती हैं। इन समितियों के दुनिया में 100 से 200 के बीच देशों में अपना कार्यालय है। इसके अलावा, विभिन्न देशों में इनके पूर्णकालिक, संवाददाताओं या रिपोर्टर्स का एक नेटवर्क है। ये समितियां दिन के 24 घंटे दुनिया की विभिन्न भाषाओं में समाचार भेजने का कार्य करती है। विभिन्न राष्ट्रों की राष्ट्रीय संवाद समितियों के साथ खबरों के आदान-प्रदान हेतु इनके अनुबंध हैं

2.3.1 यूनेस्को के प्रयास

यूनेस्को के प्रयासों के बावजूद, अपने आर्थिक साधनों एवं इलेक्ट्रॉनिक टेकनोलॉजी की वजह से इनका एकाधिकार पूरी तरह समाप्त करना सम्भव नहीं हो पाया है।

सूचना टेकनोलॉजी की क्रांति से 20वीं सदी के अन्तिम दशक में समाचार-संकलन एवं प्रसारण की दुनिया में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए हैं। कम्पयूटर, सेटेलाइट, टेलीफोन, एस.टी.डी. आदि कई ऐसे साधनों का उपयोग करके ये समितियां एवं कई राष्ट्रीय संचार समितियां सुदृढ़ बनी हैं। भारत में पी.टी.आई. और यू.एन.आई. जैसी प्रमुख समाचार समितियां हैं जिनके दुनिया की अन्य समितियों से अनुबंध हैं। लेकिन राष्ट्रीय-संवाद समितियां बड़ी समितियों से प्रतिस्पर्धा नहीं कर पातीं। इसका कारण आर्थिक अधिक है। ए.पी. जैसी संवाद समिति की क्षमता का अन्दाज इस बात से लगाया जा सकता है कि इस एजेन्सी को औसतन किसी अन्य देश में पूर्णकालिक संवाददाता पर लागत का खर्चा तीन लाख डॉलर आता है। इस प्रकार दुनिया में एक निष्पक्ष समाचार एकत्रित करने तथा उनका प्रसारण करने की दिशा में यूनेस्को का 'नया अन्तर्राष्ट्रीय सूचना तंत्र ' विकसित करने का उद्देश्य आर्थिक रुकावटों के कारण अभी पूरा करना सम्भव नहीं हो पा रहा है। दरअसल, कई बड़ी एजेन्सियों का समाचारों के संकलन, लेखन और प्रसारण का सम्पूर्ण कार्य निष्पक्षता के स्तर पर राजनीति से प्रेरित होता है या पूर्वाग्रहों या दुराग्रहों के रंगों में रंगा होता है। ऐसी स्थिति को बदलने के लिए यूनेस्को प्रयत्नशील है।

2.4 प्रसारण माध्यम के रूप में रेडियो एवं टेलीविजन

प्रसार माध्यम के रूप में रेडियो एवं टेलीविजन का भी महत्वपूर्ण स्थान है। इन्हें 'इलेक्ट्रॉनिक माध्यम ' कहा जाता है। दुनिया में सर्वाधिक विस्तार से फैलने और अरबों लोगों तक अपनी पहुंच बनाने की दृष्टि से रेडियो की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी जाती है। रेडियो प्रसारण की अपनी तकनीक के कारण राष्ट्रों की सीमाओं के आर-पार संदेश पहुँचाने या समाचारों का प्रसार करने की अदभुत क्षमता लिए हुए है। यह सीमाओं के बंधन से मुक्त है। यह तुलनात्मक दृष्टि से सर्वाधिक सस्ता माध्यम है। समाचारपत्रों को पढ़ने या टेलीविजन को देखने में जिस प्रकार ध्यान की जरूरत होती है उसकी रेडियो प्रसार सुनने के संदर्भ में आवश्यकता नहीं रहती। तात्पर्य यह है कि चलते -फिरते या काम करते समय भी रेडियो पर समाचार आदि सुनना

सरल है। यद्यपि टेलीविजन के दृश्य एक माध्यम है। यह अपना तुरन्त असर छोड़ने की क्षमता रखता है। इसका यह गुण, मुद्रण माध्यमों या रेडियो प्रसारणों में नहीं होता है। मुद्रण माध्यम जहां पड़े लिखे या साक्षर लोगों को आकर्षित कर सकता है वहां रेडियो एवं टेलीविजन की पहुंच अर्ध -शिक्षित या असाक्षर लोगों तक होती है। रेडियो और टेलीविजन ऐसे उपकरण हैं जो समाज के आधुनिकीकरण में अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

लगभग सभी देशों में रेडियो एवं टेलीविजन प्रसारण कार्य राज्य की हद में कार्य करते हैं। प्रारम्भ में सरकार का नियन्त्रण टेक्नीकल दृष्टि से 'फीक्विन्सीज ' के निर्धारण के लिए आवश्यक था। बाद में प्रसारण के प्रभाव को ठीक से समझा गया और सरकार की पकड़ की जरूरत महसूस नहीं की गई लेकिन राजनैतिक सुविधा के संदर्भ में सरकारों ने इस माध्यम को पूरी तरह मुक्त नहीं होने दिया।

कई देशों में सरकारे, रेडियो और टेलीविजन सेवाओं पर सीधा नियंत्रण रखते हैं तथा वे इसकी वित्तीय व्यवस्था सरकारी खजाने से करते हैं। लेकिन ऐसे भी बहुत से देश है जहां स्वशासी संस्थाएं या निजी कम्पनियां, टेलीविजन या रेडियो सेवाओं का स्वतन्त्र रूप से संचालन करती है। कहीं-कहीं एक मिश्रित व्यवस्था भी है जहां निजी संस्थान सरकार, स्वशासी संस्थाएं आदि के बीच इनके बेहतर संचालन करने की प्रतिस्पर्धा भी है।

बहुत कम ऐसे देश हैं, जहां पूरी तरह व्यावसायिक स्तर पर विभिन्न कम्पनियां इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों का संचालन करती हो। अमेरिका ऐसे देशों में प्रमुख है जहां व्यावसायिक स्तर पर व्यावसायिक-संस्थान ही इन सेवाओं की वित्तीय- व्यवस्था को विज्ञापनों की आय से चलाते हैं और स्वतंत्र संचालन करते हैं। लेकिन अमेरिका में भी विदेशी शार्ट-देव प्रसारण सेवा का, 'वाइस ऑफ अमेरिका ' के द्वारा वहां की सरकार संचालन करती है। टेलीविजन का प्रचार-प्रसार 1970 के दशक में तेजी से बढ़ा लेकिन आज भी कई विकासशील या पिछड़े देशों में टेलीविजन सेवाएं बहुत पीछे हैं। इसमें आर्थिक दृष्टि से अफ्रिका के कुछ देश एवं अन्य देश शामिल है।

2.4.1 नियंत्रण एवं स्वामित्व के तौर तरीके

विभिन्न समाचार एवं सूचना माध्यम के नियन्त्रण एवं स्वामित्व के तौर-तरीके अलग - अलग देशों के राजनैतिक स्वरूप एवं आर्थिक अवस्था एवं नीतियों के अनुसार विभिन्न हैं। पश्चिमी देशों के स्वतन्त्र राष्ट्रों के माध्यमों पर निजी नियन्त्रण एवं स्वामित्व धीरे- धीरे कम होने की ओर है। राजनैतिक एवं आर्थिक दबावों के कारण कई देशों में विभिन्न माध्यमों के अस्तित्व को खतरा उत्पन्न होने लगा है तथा स्वामित्व के नए रूप उभरकर सामने आने लगे हैं। कई देशों में निजी रूप से समाचारपत्रों के संचालनकर्त्ताओं को सरकार या राजनैतिक दलों का सहयोग होता है। समाचारपत्रों के स्वामित्व के सन्दर्भ में एक अनुमान के अनुसार 80 के दशक के मुद्रण माध्यम 51 देशों में स्वतन्त्र थे और 38 देशों में आंशिक रूप से स्वतन्त्र थे। अर्थात् 33 प्रतिशत समाचारपत्र पूरी तरह स्वतंत्र थे और 25 प्रतिशत आंशिक रूप से आजाद थे। शेष 42 प्रतिशत को कोई स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं थी। प्रसारण माध्यम 36 देशों में स्वतन्त्र थे और इनका प्रतिशत 23 था। आंशिक रूप से 22 प्रतिशत स्वतन्त्र थे तथा 55 प्रतिशत प्रसारण माध्यमों को प्रसारण स्वतन्त्रता उपलब्ध नहीं थी। इस प्रकार कुछ सालों पूर्व मुद्रण एवं प्रसारण माध्यमों में मात्र 23 प्रतिशत को ही स्वतन्त्रता प्राप्त थी।

2.5 अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में सूचना -राजनीति

विश्व परिदृश्य में घटित घटनाओं, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर होने वाली गोष्ठियों, सम्मेलनों आदि की विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय एजेन्सियों एवं समाचारपत्रों से निष्पक्ष कवरेज या खबरें देने की अपेक्षा की जाती है। लेकिन विकसित देशों या पश्चिमी देशों, विशेषकर अमेरिका और अविकसित एवं पिछड़े देशों के बीच इस बात पर मतभेद उभरा है कि पश्चिमी माध्यमों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय-घटनाओं की खबरें राजनैतिक रंगों के रंग में रंगी होती है तथा उनका राजनीतिकरण किया जाता है। बीसवीं सदी के अन्तिम पांच दशकों के दौरान अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर अनेक राजनैतिक घटनाएं घटीं। इन घटनाओं में तेहरान में ईरानी आतंकवादियों द्वारा अमेरिकी दूतावास पर प्रदर्शन किये गए, निकारागुआ में वहां के विद्रोहियों का दबाव बढ़ा तथा और भी देशों में इस प्रकार की कार्यवाहियों या युद्ध की स्थितियां बनी तो संयुक्त राज्य अमेरिका के टी.वी. माध्यमों एवं अखबारों द्वारा खबरों को तोड़-मरोड़ कर छापने और उनका राजनीतिकरण करने के आरोप सामने आए। फिडल कास्ट्रो ने उच्च शक्ति के प्रसारणों के द्वारा अमेरिकी कार्यक्रमों में बाधा डाली। इस पर अमेरिका के तत्कालीन रीगन प्रशासन ने ऐतराज किया और क्यूबा में कास्ट्रो के शासन में वहां की दशा एवं जीवन के बारे में 'सत्य कथन ' की मांग की तथा क्यूबा के रेडियो को वहां स्वतन्त्र रूप से काम करने देने पर जोर दिया।

यहां विभिन्न घटनाओं और उनके बारे में दी गई खबरों को लेकर अपने मतभेदों का विश्लेषण करने का प्रयास है। घटनाओं की तह में जाने के बजाय यह संकेत देना पर्याप्त होगा कि इन प्रसंगों से दुनिया में 'सूचनाओं के मुक्त प्रवाह' को लेकर विभित्र अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर एक बहस छिड़ी। संयुक्त राष्ट्र संघ, यूनेस्को एवं गुटनिरपेक्षों राष्ट्रों के आदोलनों में सूचनाओं के मुक्त प्रवाह के संबंध में तथा इस बारे में विविध अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं से पैदा हुए विवादों एवं अन्य मुद्दों की निष्पक्षता के संदर्भ में विचार उत्पत्र होने की जड़ें पश्चिमी देशों और तीसरी दुनिया के नाम से संबोधित किए जाने वाले अविकसित या पिछड़े देशों में समाचार माध्यमों की अलग -अलग प्रकार की भूमिका रही है।

2.5.1 माध्यमों की भूमिका का परिदृश्य

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद दुनिया के लगभग एक सौ गरीब राष्ट्र, जिनकी आबादी दुनिया में दो तिहाई थी, उभर कर सामने आए। इन देशों की सबसे पहली प्राथमिकता आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक विकास करना थी। इस नए परिदृश्य में विकसित राष्ट्र अल्पमत में आ गए। इनकी प्राथमिकताएं गरीब देशों में भिन्न थीं अर्थात् व्यक्तिगत स्वतन्त्रता एवं निजी व्यवसाय की धारणा पर इनका बल था। अचानक यों अल्पमत में आ जाने तथा अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओ के मंच पर संख्या की दृष्टि से कमजोर पड़ जाने से कई नई परिस्थितियां पैदा हुई।

1950 के दशक में गुटनिरपेक्ष आंदोलन शुरू हुआ। इसमें धीरे- धीरे 85 राष्ट्र शामिल हो गार। इस समूह ने पूर्व या पश्चिम के संघर्ष में पड़ने के बजाय एक तीसरा रास्ता निकाला और इसी के द्वारा अपनी सरकारों एवं विकास के मार्ग का अनुसरण करने का फैसला किया। इस संपूर्ण परिदृश्य ने सूचना या समाचार -माध्यमों के कामकाज के तौर तरीकों का भी विश्लेषण करना प्रारम्भ किया और उसका परिणाम यह हुआ कि विभिन्न देशों के समाचार -माध्यमों की भूमिका के संदर्भ में चिन्तन होने लगा।

2.5.2 संचार और विकास

दुनिया की राजनीतिक उथल-पुथल के कारण कई देश स्वतन्त्र हुए और उन्होंने अपने देशों के विकास की अवधारणा को लेकर विभिन्न प्रयत्न शुरू किए। ऐसे में संचार माध्यम विकास के महत्वपूर्ण उपकरण बन गए। संचार माध्यमों का टकनोलॉजी में आए परिवर्तनों, द्विपक्षीय समझौतों के अन्तर्गत सहायता कार्यक्रमों एवं अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं के सहयोग से संचार माध्यमों का ढांचागत विकास हुआ और इनका प्रचार तेजी से फैला। रेडियो और ट्रांजिस्टर क्रांति ने अविकसित और ग्रामीण क्षेत्रों तक गरीब देशों में भी अपनी पहुँच तेजी से बढ़ाई। टी.वी. के विकास ने भी गति पकड़ी। 1980 में सैटेलाइट के कारण रेडियो एवं टी.वी. के विकास को एक नया आयाम मिला।

जनसंचार के माध्यमों की निरन्तर प्रगति ने विकासशील एवं अविकसित देशों में विकास कार्यों के संदर्भ में इनकी उपादेयता को सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान देना शुरू कर दिया है। इससे यह आशा बलवती होने लगी है कि राजनैतिक विध्वंस या राजनीति के रंगों से मुक्त होकर, जनसंचार माध्यम विकास की प्राथमिकताओं से जुड़ने की प्रक्रिया में है।

संचार माध्यम कई प्रकार से विकास का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। इनसे बनी -बनाई धारणाओं एवं प्रवृत्तियों को बदलने, ज्ञान वृद्धि एवं शिक्षण देने की क्षमता होती है। भारत में 'सेटेलाइट इन्सट्रक्शनल टेलीविजन एक्सपेरिमेन्ट ' (साइट) अर्थात् दूरदर्शन के माध्यम से सेटेलाइट द्वारा शिक्षण का प्रयोग, संचार माध्यमों को नई दिशा प्रदान करने वाला एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुआ है। यह आबादी नियंत्रण, स्वास्थ्य, कृषि एवं शिक्षा कार्यक्रमों के प्रचार -प्रसार में टी.वी. की उपयोगिता का एक बड़ा उदाहरण है। इसी प्रकार तंजानिया ने अपनी स्थानीय स्वास्थ्य संबंधी योजना के क्रियान्वयन में रेडियो कार्यक्रमों के अभियान द्वारा एक अनुपम सफलता प्राप्त की। इस प्रकार 'विकास पत्रकारिता ' की एक नई धारणा विश्व में फैली है। इस धारणा को विस्तार एवं सुदृढ़ आधार देने में प्रेस फाउण्डेशन ऑफ एशिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 'विकास पत्रकारिता ' के विचार को जनसहभागिता को मुद्रण माध्यमों के द्वारा प्रेरित करके राष्ट्रीय सेवा भावना को बढ़ावा देने का मुख्य लक्ष्य लेकर यह अभियान चलाया गया।

लेकिन उक्त विचारधारा के प्रति जागृति के प्रयासों के बावजूद ऐसे अनेक उदाहरण हैं जहां किसी उत्पाद या जीवन शैली को लोकप्रिय बनाने या चीजों को मनोरंजनात्मक कार्यक्रमों की आड़ में बेचने के लिए संदेश तैयार किए जाते हैं। इस प्रकार संचार माध्यमों का निहित हितों के लिए इस्तेमाल करने वाले विकसित देशों में अमेरिका की भूमिका सर्वाधिक रही है। विज्ञापनों, टी.वी. कार्यक्रमों एवं फिल्मों के माध्यम से इस प्रकार संचार माध्यमों का उपयोग करने की प्रवृत्ति भी है। इस प्रकार माध्यमों के द्वारा लोगों की अपेक्षाओं और कुण्ठाओं को बढ़ावा मिलता है। जहां अविकसित एवं पिछड़े देशों ने विभिन्न माध्यमों का उपयोग विकास के लिए करने की दिशा में अलग- अलग स्तरों पर कम या अधिक सफलता प्राप्त की है वहां इन्हें यह भी डर है कि माध्यमों का उपयोग विकास में सहभागिता को उत्प्रेरित करने की प्रक्रिया में विकसित देशों के निजी हितों से प्रेरित माध्यम कुण्ठाओं को जन्म देने वाले हैं, विकास के मार्ग में बाधक है।

इस संदर्भ में अमेरिका में मुद्रण एवं प्रसारण माध्यमों का निजी हाथों में होने के कारण उनके लक्ष्य, अफ्रीका या एशिया के विकासशील देशों के लक्ष्यों से भिन्न हैं क्योंकि विकासशील देशों में संचार माध्यमों का संचालन सार्वजनिक धन या सरकारों द्वारा किया जाता है। इस कारण

सरकारों का यह दायित्व हो जाता है कि वे राष्ट्रीय विकास के लक्ष्यों को सामने रखकर उनका उपयोग करें।

2.5.3 अमेरिका में जनसंचार -माध्यमों की विशिष्ट प्रणाली

अमेरिकी माध्यमों के कार्यकलापों एवं नीति के संबंध में तीसरी दुनिया के देशों की प्रतिक्रिया के संदर्भ में अमेरिका के जनसंचार माध्यमों की विशिष्ट प्रवृत्तिया प्रणाली को समझना आवश्यक है। अमेरिका में जनसंचार माध्यमों की स्वतंत्रत का आधार वहां के संविधान में हुआ प्रथम संशोधन है। इस संशोधन में कहा गया है कि अमेरिकी कांग्रेस कोई ऐसा कानून पारित नहीं करेगी जिससे अभिव्यक्ति या प्रेस की स्वतन्त्रता में कोई कमी या कटौती हो। यह नीति ब्रिटेन के संविधान की उस परम्परा से पैदा हुई जिसके अन्तर्गत प्रेस एक चौकीदार या 'वॉच डॉग' का काम करती है तथा सरकार पर निगाह रखती है। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में अमेरिका की कानूनन यह माना गया है कि संचार कार्य गैर सरकारी होना चाहिए। बहुत कम देश ऐसे हैं जो ब्रिटेन और अमेरिका की इस धारणा से सहमत नहीं हैं कि प्रेस को सरकार का 'मोनिटर ' होना चाहिए। अमेरिका के पश्चिमी साथी देशों में अंधिकांशत संचार उद्योग निजी हाथों में है।

इस नीति का नतीजा हुआ है कि अमेरिका जैसे देशों की जनसंचार माध्यमों के संदर्भ में स्थिति के बारे में विचारकों का मत है कि किस संदेश का सम्प्रेषण करना है या क्या समाचार देना है तथा किस बात को उसमें से छोड़ना है, किस तरह से संदेश प्रसारित करना या देना है आदि प्रश्नों का निर्णय करने का आधार व्यावसायिक होता है। इस प्रकार अमेरिका के जनसंचार माध्यमों के अनुसार व्यावसायिक एवं निजी हितों एवं आदर्शों को साथ लेकर चलना ही. सूचना का स्वतन्त्र प्रवाह है जबकि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर 'सूचना के मुक्त प्रवाह ' की धारणा के अनुसार अमेरिका के माध्यमों की विशेषता या उनका सोच ठीक नहीं बैठता। वहां के माध्यम निजी हितों के पोषण को बुरा नहीं मानते। यह उनके संविधान के अनुसार आचरण है। इसी आचरण के कारण वहां के माध्यम 'राजनैतिक प्रक्रिया के अवांछित लाभ ' देने में सहायक होते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं को देखने तथा उनका कवरेज करने के संदर्भ में भाषा, इरादा और संपूर्ण सोच मैं अमेरिका के माध्यम अपनी स्वहितों की भावना को मध्य में रखते हैं। इस कारण से निष्पक्ष, मुक्त सूचना या समाचार -प्रवाह की अन्तर्राष्ट्रीय मान्यताओं एवं धारणाओं से पश्चिमी और खासकर अमेरिकी माध्यमों की प्रवृत्ति से विकासशील या अविकसित देशों की टकराहट का सिलसिला चलने लगा है और वे सूचनातंत्र की शक्तिशाली किन्तु चालाकी भरी 'सूचना के स्वतंत्र ' प्रवाह की पश्चिमी नीति को पहचानने लगे हैं।

2.6 संयुक्त राष्ट्र संघ एवं अन्य एजेन्सियों के प्रयास

संयुक्त राष्ट्र संघ के 1945 में मात्र 50 देश सदस्य थे। यह वह समय था जबकि पश्चिमी देशों के साम्राज्य टूटने लगे थे। 1980 के आसपास आते- आते इसके सदस्यों की संख्या 149 हो गई। दुनिया साम्यवाद और पूंजीवाद के दो धड़ों के बीच बंटी हुई थी। संयुक्त राष्ट्र में पश्चिमी देशों का वर्चस्व था और समाचारों एवं सूचना के प्रसंग में सारी बहस और घोषणाएं पश्चिमी आदर्शों के साये मे होती थीं।

2.6.1 सूचना के संबंध में संयुक्त राष्ट्र की भूमिका

संयुक्त राष्ट्र संघ की साधारण सभा (जनरल एसेम्बली) ने सबसे पहले एक प्रस्ताव 59 (1) के अन्तर्गत यू.एन. डिक्लेरेशन ऑफ फ्रीडम फ्री फ्लो ऑफ इन्फोरमेशन सन् 1946 में जारी किया। अर्थात् सूचना की स्वतन्त्रता के बारे में घोषणापत्र जारी किया। मानव-अधिकारों के मौलिक सिद्धान्तों, अभिव्यक्ति एवं सूचना की स्वतन्त्रता के बारे में अपनी धारणा स्पष्ट की। घोषणा पत्र में कहा गया कि "सभी राज्यों को अपने देशों एवं सीमाओं के पार 'सूचना के स्वतंत्र प्रवाह ' के संरक्षण की नीति की घोषणा करनी चाहिए। सूचना -प्राप्त करने एवं प्रसारित करने के अधिकार का जनता को पुख्ता रूप से विश्वास दिलाने के लिए प्रयास करना चाहिए। "

इसके दो साल बाद संयुक्त राष्ट्र संघ ने जिनेवा में 'सूचना की स्वतन्त्रता ' विषय पर एक सम्मेलन का आयोजन किया। इस सम्मेलन में अमेरिका ने 'स्वतंत्र तथा निर्बाध सूचना प्रवाह ' की मांग की लेकिन सोवियत रूस का मत था कि जब संचार माध्यमों पर पश्चिम में धनिक वर्ग का नियंत्रण रहेगा, तब तक सम्प्रेक्षण या सूचना -प्रवाह की स्वतन्त्रता के अस्तित्व की कल्पना करना व्यर्थ है। बहरहाल जिनेवा सम्मेलन से चली इस संदर्भ की बहस और उसके बाद के प्रयत्नों के बावजूद सूचना की स्वतन्त्रता पर एक सहमति कायम नहीं हो पाई। लेकिन समय - समय पर संयुक्त राष्ट्र संघ ने इस संबंध में कानूनी स्तर पर इस प्रकार के मौलिक सिद्धान्तों को लागू करने पर बल दिया।

2.7 अन्तरिक्ष में सूचना- प्रवाह का प्रश्न

प्रथम अंतरिक्ष सेटेलाइट 'स्पूत्निक- 1 ' के छोड़े जाने के बाद संयुक्त राष्ट्र संघ 'सूचना के स्वतंत्र प्रवाह ' के प्रश्न सीधे जुड़ गया। इसे 'बाह्य- अंतरिक्ष ', ' आउटर-स्पेस ' के उपयोग के बारे में सन् 1950 में ' अंतरिक्ष के शांतिपूर्ण कार्यों के लिए उपयोगी संबंधी एक समिति गठित की। ' 1967 में 'यू.एन. आउटर-स्पेस ट्रटी' की गई। इस प्रकार विश्व स्तर पर परस्पर विरोधी विचारों के बाद सेटेलाइट के उपयोग एवं टी.वी. प्रसारण संबंधी कुछ पहलुओं पर कहीं एक राय हुई।

2.8 यूनेस्को के प्रयास

1 संयुक्त राष्ट्र संघ के शिक्षा, विज्ञान एवं संस्कृति संगठन (दॉ यूनाइटेड नेशन्स एज्यूकेशनल, साईन्टिफिक एण्ड कल्चरल ऑर्गेनाईजेशन) अपने प्रारम्भ से ही संचार माध्यमों संबंधी मुद्दों के प्रति अपना विशेष सरोकार रखती आया है। इस संगठन के संविधान में यह स्पष्ट रूप से रेखांकित किया गया है कि "यह संगठन जनसंचार माध्यमों के द्वारा लोगों के परस्पर ज्ञान एवं समझ को बढ़ाने का काम करेगा तथा यह सुझाव देगा कि शब्द या आकृति (इमेज) के द्वारा विचारों के स्वतंत्र - प्रवाह को बढ़ावा देने के लिए किस प्रकार के आवश्यक समझौतों की जरूरत है। " संयुक्त राष्ट्र संघ के इस संगठन ने अपने प्रारंभिक वर्षों में महत्वपूर्ण कार्य किया क्योंकि सन् 1954 तक स्थिति यही थी। वर्ष 1954 तक अन्तर्राष्ट्रीय- मंचों पश्चिमी देशों का भारी प्रभाव होने के कारण सोवियत रूस ऐसे मंचों पर अनुपस्थित रहता था। दुनिया के विभिन्न मत-मतान्तरों वाले देशों के बीच सूचना के स्वतंत्र प्रवाह एवं आपसी समझ का वातावरण तैयार करने में इस संगठन ने महत्वपूर्ण प्रयास किए तथा गहरा योग दिया। इसके बाद 1969 में

मॉन्ट्रियल में विशेषज्ञों की बैठक में 'शब्दों के दो- तरफा प्रसार ', 'समाचारों का सन्तुलित प्रस्तर ' आदि पर विचार हुआ तथा भाग ले रहे विशेषज्ञों ने तीसरी दुनिया से समाचारों के पश्चिमी देशों को सुझाव प्रस्तुत किए।

इस प्रकार निरंतर आदोलनों एवं बैठकों के द्वारा यूनेस्को ने समाचार-जगत के विश्व परिदृश्य को बेहतर बनाने की दिशा में अनेक प्रयास किए। 1976 में यूनेस्को की नैरोबी में हुई 19वीं कांफ्रेंस में 'विश्व में सूचना प्रणाली ' (वर्ल्ड इन्फोरमेशन ऑर्डर) विषय पर गरमा-गरम बहस हुई। संचार समस्याओं के अध्ययन के लिए इस कांफ्रेंस में अन्तर्राष्ट्रीय कमीशन बनाया गया। आयरलैंड के लेनिन एवं नोबल पुरस्कार विजेता सियन मेक ब्रिज को इस कमीशन का अध्यक्ष चुना गया।

यूनेस्को की 20वीं सदी साधारणतया 1978 में पेरिस में हुई। इसमें अमेरिका, फ्रांस, श्रीलंका, ट्यूनिशिया और वेनेन्जुला ने कमीशन से मांग की कि वह एक न्यायपूर्ण, स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं प्रभावपूर्ण विश्व सूचना-तंत्र की स्थापना के लिए व्यवहारिक तरीके सामने लाए। 1980 में उक्त कमीशन ने 'मेनी वॉयसेज, वन वर्ल्ड ' शीर्षक से अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। 1980 की यूनेस्को की साधारण सभा में इस रिपोर्ट के निष्कर्षों पर विचार हुआ। 1981 की बैठक में 'पत्रकारों की सुरक्षा ' विषय पर विचार विनिमय किया गया।

2.9 गुट निरपेक्ष आंदोलन का विकास पर बल

गुट निरपेक्ष राष्ट्रों के सम्मेलन में 1973 में 75 राष्ट्रों ने भाग लिया। 24 देशों के प्रतिनिधि भी सम्मेलन की कार्यवाही के प्रत्यक्षदर्शी थे। आस्ट्रिया, फिनलैंड एवं स्वीडन अतिथि देश थे। इस सम्मेलन में दुनिया की आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक स्थिति की समीक्षा की गई। इस आयोजन में 'विदेशी-शासन युग ' या 'कोलोनियल एरा के दुष्प्रभावों ' को दूर करने के उपायों पर विचार करते हुए, निम्न बिन्दुओं के क्रियान्वयन की एक योजना तैयार की गई -

1. विकासशील देशों को 'जनसंचार' के क्षेत्र में परस्पर विचारों के अधिक आदान-प्रदान के लिए यह पहचान करनी चाहिए कि विदेशियों के शासनकाल की देन के रूप में विभिन्न जनसंचार माध्यमों की भूमिका क्या है? इस भूमिका ने इन विकासशील देशों के बीच स्वतंत्र, सीधे एवं त्वरित सूचना आदान-प्रदान की दिशा में क्या रूकावटें पैदा की है?
2. इस स्थिति की समीक्षा करके एक संयुक्त कार्य योजना बनाई जाए जो परस्पर संचार को बढ़ाए।
3. सेटेलाइट्स की मिली -जुली स्वामित्व वाली एक प्रणाली बनाई जाए।
4. विकासशील देशों के समाचार -जगत् या जनसंचार माध्यमों के बीच सम्पर्कों को प्रोत्साहित किया जाए ताकि विश्वविद्यालयों, पुस्तकालयों, योजना, शोध आदि संस्थाओं से संबंधित अनुभवों एवं विशेषज्ञता का आदान-प्रदान करके अनुभवों को परस्पर बांटा जा सके।
5. समाचारपत्र-पत्रिकाओं, रेडियो, टी.वी. आदि समाचार माध्यमों के द्वारा अपने- अपने देशों में कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा, चिकित्सा आदि विविध क्षेत्रों की विभिन्न देशों की उपलब्धियों की जानकारी एक दूसरे को मिल सके।

2.9.1 गुट निरपेक्ष देशों की समाचार -समितियों के 'पूल ' का निर्माण

अलजियर्स सम्मेलन के प्रस्तावों के अनुरूप 'तानजुग ' नामक यूगोस्लाविया की समाचार -समिति की पहल पर गुट निरपेक्ष देशों की समाचार-समितियों का एक 'पूल ' बनाया गया। 20 जनवरी, 1975 को यह काम शुरू हुआ। एक साल में इस 'पूल ' की 26 समितियां सदस्य बनीं और 3500 समाचारों को जारी किया गया। परस्पर समाचारों के आदान -प्रदान के इस कार्य से तीन साल की अवधि में, 40 राष्ट्रीय-समाचार समितियां जुड़ गईं। संयुक्त राष्ट्र संघ, यूनेस्को, विश्व बैंक, एसोसिएटेड प्रेस (ए.पी.), यूनाईटेड प्रेस इन्टरनेशनल (यू.पी.आई.) ने इस कार्य को प्रोत्साहित किया।

इसके बाद के प्रयासों ने समाचार-तंत्र के स्तर पर राष्ट्रों, विशेषकर विकासशील देशों के बीच सहयोग का एक बेहतर और प्रभावी काम किया। इस 'पूल' का संविधान तैयार करने के लिए समाचार एजेन्सियों एवं सरकारों के प्रतिनिधियों की एक बैठक ट्यूनेशिया के सहयोग से 26 - 30 मार्च, 1976 भारत में हुई। इस 'ट्यूनिश सिम्पोजियम ' की रिपोर्ट में जनमाध्यमों की आत्मनिर्भरता विभिन्न गुटनिरपेक्ष देशों में संभावना के उपयोग के बारे में सुझाव दिये गए थे। भावी जन माध्यम-ढांचा तैयार करके समाचारपत्रों एवं विभिन्न माध्यमों की क्षमता बढ़ाने के लिए भी सुझाव प्रस्तुत किए गए। इस आयोजन में विशेषकर ढांचागत एवं संचालन संबंधी विभिन्न माध्यमों की समस्याओं एवं इनके विकास के लिए संभव उपायों की भी गुट निरपेक्ष देशों के संदर्भ में चर्चा की गई।

2.9.2 दिल्ली सम्मेलन

गुट निरपेक्ष देश की समाचारपत्रों एवं विभिन्न माध्यमों के बारे में नीति के गहन अध्ययन के लक्ष्य को लेकर दिल्ली में जुलाई 1-13, 1976 में मंत्री-स्तर की कॉन्फ्रेन्स हुई। इसमें 60 देशों एवं संयुक्त राष्ट्र सहित कई संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। 31 समाचार समितियों के प्रबंधक, 33 देशों के सूचना एवं प्रसारण मंत्रियों ने इसमें हिस्सा लिया। गुट निरपेक्ष देशों की समाचार-समितियों के 'पूल ' को प्रगति-विवरण 'तान्जुग' से प्राप्त हो चुका था। 'ट्यूनिस सिम्पोजियम' की सिफारिशों में 'समाचार -पूल ' के लिए 'सहयोग समिति ' (कॉआर्डिनेशन कमेटी) की स्थापना करने की सिफारिश भी मिल चुकी थी। इस बैठक में भारत को 'कॉआर्डिनेशन कमेटी ' का प्रमुख बनाया गया। 'नई दिल्ली घोषणा पत्र ' तैयार हुआ और उस बैठक में स्वीकार कर लिया गया। इस घोषणा पत्र में विश्व भर में 'सूचना -असंतुलन ' के संदर्भ में गुट निरपेक्ष आंदोलन की इस स्थिति को बदलने की प्रतिबद्धता दोहराई गई। सूचना के अधिकार, सम्प्रेक्षण करने तथा सेटेलाइट संचालन आदि के बारे में एक -सी धारणा के विकास के सवाल की भी चर्चा की गई। यह निर्णय लिया गया कि विशेषज्ञों की एक समिति बनाई जाये। यह समिति संचार-सुविधाओं, सेटेलाइट संचार, रेडियो प्रसारणों के क्षेत्र में गुट निरपेक्ष देशों के बीच सहयोग की संभावनाओं का अध्ययन करें।

इस साल कोलम्बो में हुए गुट निरपेक्ष देशों के सम्मेलन में दिल्ली सम्मेलन की सिफारिशों, मंत्रियों की बैठक में स्वीकृत सिफारिशों आदि पर विचार हुआ। दिल्ली घोषणा पत्र को स्वीकृति दी गई। गुट निरपेक्ष देशों के समाचार समितियों के संविधान को स्वीकृति दी गई।

इस प्रकार दुनिया में निष्पक्ष सूचनाओं का विभिन्न देशों को आदान -प्रदान कराने तथा सामाजिक, आर्थिक राजनैतिक एवं सांस्कृतिक विकास को गति देने में माध्यमों की भूमिका का एक सिलसिला चला। 1979 में हवाना में हुए सम्मेलन में पश्चिमी और पूर्वी देशों के बीच एक तटस्थ भाव के साथ सहयोग के विकास की चर्चा की गई।

इस प्रकार 'सूचना प्रवाह ' के संबंध में संयुक्त राष्ट्र संघ, यूनेस्को एवं गुट निरपेक्ष देशों के आंदोलन के बीच हुए विवादों, सम्मेलनों और बैठकों में इस मुद्दों पर विशेष चर्चा की गई -

1. 'समाचार ' के बारे में विरोधी-विचार।
2. समाचार को तोड़ मरोड़ कर एवं असंतुलित रूप से प्रस्तुत करने संबंधी आरोप तथा
3. पश्चिमी माध्यम -संस्थाओं पर निर्भरत।

इस प्रकार समाचारों को निष्पक्ष, स्वतंत्र, संतुलित, बिना तोड़ मरोड़े, तथ्यात्मक एवं सत्यात्मक रूप से प्रसारित करने और दुनिया में एक स्वस्थ समाचार-तंत्र के एक ढांचे की यह लड़ाई एक लंबे दौर से गुजरी है और विश्व स्तर पर यह 'संकट' एक आदर्श विश्व व्यवस्था के द्वारा ही पूरी तरह टल सकता है। इसके पूर्ण समाधान की संभावना का रास्ता बहुत लम्बा है।

2.10 सारांश

साम्राज्यवाद, पूंजीवाद और साम्यवाद के अपने- अपने हितों और विचारधाराओं के अलावा परिचित तथा विकसित, विकास की ओर अग्रसर और पिछड़े देशों की चिन्ताओं एवं हितों के बीच 'सूचना के स्वतंत्र प्रवाह' या तटस्थ एवं निष्पक्ष पत्रकारिता का संघर्ष एक लम्बे ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य से गुजरा है। पूर्वाग्रहों, दुराग्रहों, टकनोलॉजी क्षमता, स्वहितों, समाचारों को तोड़- मरोड़ कर असंतुलित ढंग से प्रसारित करने की प्रवृत्तियों और समय के साथ आजादी की नई रोशनी में आए देशों, गुट निरपेक्ष देशों आदि के साथ यू.एन.ओ., यूनेस्को तथा अनेक निष्पक्ष संस्थाओं के प्रयासों ने विश्व समाचारपत्रों एवं माध्यमों को एक नया सोच और नई दिशा देने में गहरी सफलता प्राप्त की है लेकिन विश्व मंचों पर हुए निर्णयों एवं विचास् विमर्श के बाद के परिद्दश्य मे अपरोक्ष- रूप से विभिन्न देशों और पश्चिम के कुछेक शक्तिशाली देशों की अपनी 'समाचार' की परिभाषाएं, समाचार-मूल्य, समाचार प्रणाली और साधन तंत्र है जो आज भी तटस्थ, निष्पक्ष, पूर्णतया स्वतंत्र विश्व समाचार-जगत् के निर्माण के आदर्श की स्थापना के मार्ग में रुकावटें डालता है।

विकसित देशों की तुलना में विकास की ओर बढ़ रहे देशों तथा पिछड़ेपन से ग्रस्त राष्ट्रों के आपसी सहयोग और अनुभवों से विश्व समाचार जगत् में धीरे-धीरे परिवर्तनों की प्रक्रिया जारी है 21वीं सदी की दुनिया में के ही देश शक्ति सम्पन्न होंगे जो कि एक निष्पक्ष, स्वतंत्र और बलशाली सूचना तंत्र एवं सूचना टकनोलॉजी से युक्त होगें। हथियारों की होड़, धन सम्पति और वैभव के आधार पर शक्तिशाली बनने का समय 20वीं सदी का अन्त आते-आते धूमिल होने लग गया। 21वीं सदी ज्ञान एवं सूचना तंत्र की शक्ति की सदी है जो एक नए सूचना या समाचार के स्वतंत्र प्रवाह के लिए आशा का उजाला लेकर आने वाली सदी के रूप में जानी जाएगी।

2.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1. Hand Book of the Media in Asia-Sheltcon A Gunaratne.
2. World Press Encyclopedia-Marjorie B. Bank, James Jonson

3. Television in Contemporary Asia-David French & Michael Richards
4. India's Communication Revolution-Arvind Singhal, Everett Mrogers

2.12 निबंधात्मक प्रश्न

1. अन्तर्राष्ट्रीय समाचार-जगत् की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की विवेचना कीजिए।
2. अन्तर्राष्ट्रीय समाचार समितियों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।
3. अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में सूचना राजनीति विषय पर एक आलोचनात्मक लेख लिखिए।
4. गुट निरपेक्ष आंदोलन से आप क्या समझते हैं?
5. संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए
   (1) अंतरिक्ष में सूचना प्रवाह का प्रश्न
   (2) सूचना के संबंध में संयुक्त राष्ट्र की भूमिका
   (3) प्रसारण माध्यम के रूप में रेडियो एवं टेलीविजन

इकाई 3 विश्व के विकसित समाचारपत्र

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 विश्व समाचार जगत् के बदलते आयाम

- 3.2.1 समाचार-माध्यमों की सामग्री
- 3.2.2 विश्व प्रेस से अपेक्षाएं और उसकी विफलता
- 3.2.3 अल्पसंख्य श्रेष्ठ समाचारपत्र या प्रेस
- 3.2.4 अच्छे अखबारों के प्रकार

3.3 दुनिया के अखबारों का सर्वेक्षण

3.4 विश्व की विकसित प्रेस प्रणाली

- 3.4.1 आस्ट्रेलिया की प्रेस
- 3.4.2 चीन का समाचार जगत्
- 3.4.3 फ्रांस के सूचना माध्यम
- 3.4.4 जर्मनी की प्रेस

3.5 भारत में समाचारपत्र

3.6 इजरायल, जापान एवं अन्य देशों के समाचार -माध्यम

3.7 विश्व समाचार -जगत् की विशेषताएं

3.8 सारांश

3.9 निबन्धात्मक प्रश्न

3.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप यह स्पष्ट कर सकेंगे कि-

- दुनिया में समाचार माध्यमों की स्थिति क्या है?
- सूचना टकनोलॉजी एवं वैज्ञानिक प्रयासों से समाचार -जगत् में कितने और क्या परिवर्तन हुए हैं।
- संरचनात्मक एवं गुणात्मक स्तर पर समाचार-जगत् की दशा और दिशा क्या है तथा किन प्रवृत्तियों की ओर आज की प्रेस उन्मुख है।
- विकसित देशों के समाचारपत्र और माध्यमों की एक समीक्षात्मक झलक और सर्वेक्षण करने में भी आप सक्षम हो सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना

पिछले लगभग एक सौ साल के दुनिया के बदलाव के विभिन्न दौर, इस बात की ओर स्पष्ट संकेत करते हैं कि गत सदी में आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक दृष्टि से दुनिया में अनेक परिवर्तन हुए हैं। सदी के अन्तिम कुछ दशक तो अत्यन्त तेज रफ्तार से होने वाले परिवर्तनों से होकर गुजरे हैं। कम्पयूटर, इंटरनेट, वेब आदि अनेक ऐसे परिवर्तनकारी साधनों

का संचार हुआ जिन्होंने दुनिया का नक्शा ही पलट दिया है। ऐसे में एक ओर दुनिया की दूरी घटी है, दुनिया का आकाश सिकुड़ा है तो आर्थिक और सामाजिक दूरियां बढ़ी भी है। दुनिया आर्थिक स्तर पर तीन बड़े धड़ों में विभाजित हो गई है। एक ओर विकसित या अति सम्पन्न देशों की दुनिया है जिसे विकसित राष्ट्रों की दुनिया कहा जाता है, दूसरी ओर विकास-यात्रा में जूझ रहे विकासशील देशों और तीसरा गरीबी का जीवन जीने वाले करोड़ों समाचार लाचार, विवश और गरीबों के देश है जिन्हें पिछड़े देश कहा जाता है।

सूचना तंत्र भी वैज्ञानिक प्रयासों से विकास की एक नई मंजिल तक पहुंच गए हैं। त्वरित गति से संदेश संचारण की इस नए प्रकार की दुनिया के संपन्न, विकासशील और पिछड़े देशों की आर्थिक-स्थिति के परिदृश्य में इन देशों का समाचार-जगत् और जनसंचार माध्यम भी भिन्न अवस्थाओं में तथा इन अलग-अलग देशों की अपनी- अपनी विभिन्न चिन्ताओं और चिन्तन के अनुरूप इन तीनों वर्गों का समाचार -जगत भी आपस में प्रवृत्तियों के संदर्भ में अलग- अलग है लेकिन कुछ प्रवृत्तियां संसार के सभी समाचार माध्यमों में एक खास दिशा का संकेत देती है। इस इकाई के माध्यम से एक सदी के संघर्षों और प्रयत्नों के बाद दुनिया के समाचार-पत्र जगत् की समसामयिक दशा और दिशा की ओर इंगित करना ही इसका मुख्य ध्येय है।

3.2 विश्व समाचार -जगत् के बदलते आयाम

विश्वसनीयता और समाचारों के स्वतंत्र प्रभाव में अपनी पहचान खोजते-खोजते किसी बेहतर मंजिल की ओर बढ़ने के बजाय त्वरित सूचनाओं के आदान-प्रदान की आधुनिक सुविधाओं के बावजूद विश्व समाचार जगत् की साख का ग्राफ नीचे की ओर जाने को है। प्रेस के हालात यहां तक पहुंच गए है कि दुनिया भर में इसको भारी आलोचना का शिकार होना पड़ रहा है। व्यावसायिकता (प्रोफेशनेलिज्म) में गिरावट, समाचारों के छिछले विषय, घटनाओं एवं मसलों को सनसनीखेज बनाने की प्रवृत्ति, एक 'स्टीरियो टाईप ' में समाचारों का गठन और इस प्रकार के अनेक गैर -जिम्मेदाराना आरोपों एवं आलोचनाओं के घेरे में वह समाचारपत्र-जगत् फंस गया है जो प्रसारण संख्यात्मक-स्तर पर बहुत अधिकार विस्तार में फैला है। जन माध्यमों के फैलाव में तो भारी वृद्धि हुई है लेकिन गुणात्मक-स्तर पर विश्व-समाचार -जगत् की भूमिका निराशाजनक मानी जाती है। दुनिया के विभिन्न भागों में रचनात्मक एवं विचारपूर्ण अंत : प्रक्रियाओं की दृष्टि से विश्व में प्रेस की क्रियाकलापों को मध्यम -दर्जे एवं सनसनीखेज पत्रकारिता के रूप में माना जाता है और यह प्रवृत्ति समाचार - माध्यमों का बेहतर -स्वरूप बनाने के संदर्भ में घातक है।

3.2.1 समाचारपत्रों की सामग्री

छपाई की सुविधाएं बढ़ी हैं। रंगीन और बेहतर ऑफसेट छपाई, कम्प्यूटरों के माध्यम से बेहतर संरचनात्मक स्वरूप का निर्माण आदि के साथ अच्छी सुरुचिपूर्ण, तथ्यात्मक, सत्यात्मक, विचारपूर्ण एवं सकारात्मक सामग्री की चर्चा की जाए तो अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अनेक समाचारपत्रों का स्तर 'गप-शप ' की सामग्री तक सीमित लगता है। 'बड़े ' लोगों के निजी जीवन से संबंधित चटखारेदार, चटपटी कहानियां तथा अपराधिक घटनाओं एवं यौन-विकृतियों से पूर्ण समाचारों की विभिन्न जनसंचार माध्यमों में भरमार है।

यह माना जा रहा है कि विश्व-स्तर पर खबरों के प्रकाशन में एक गहरी खाई दिखाई पड़ती है। विकासशील एवं पिछड़े देशों के विकासात्मक प्रयासों की खबरों का 'सोफट' मानकर

अवहेलना की जाती है। गुट निरपेक्ष देशों के नकारात्मक पक्ष को बढ़ा-चढ़ाकर छापने तथा सकारात्मक एवं विकासात्मक समाचारों कोई महत्व नहीं दिये जाने की प्रवृत्ति अनेक विकसित देशों के अखबारों में पाई जाती है। इसके अलावा किसी देश में सत्ता हथियाने या सरकार का तख्ता पलटने, भूकम्प, तूफान, हत्याओं, खेलों आदि की घटनाओं, बड़े माने जाने वाले लोगों, अपराधियों एवं विक्षिप्त प्रकार के लोगों को जमकर कवरेज दिए जाने की प्रवृत्ति है।

अन्तर्राष्ट्रीय प्रेस का एक छोटा भाग ऐसा जरूर है जिसकी राजनैतिक बारीकियों, शिक्षा, विज्ञान, साहित्य, कला, धर्म आदि में दिलचस्पी होती है। विकसित देशों के अखबारों में बहुत कम विदेशी खबरें छपती है। इस प्रकार विश्व के समाचारपत्र -जगत के आलोचकों का मत है कि विश्व प्रेस द्वारा संवेदनात्मक प्रगतिशील, सांस्कृतिक और विकासात्मक खबरों एवं विचारों की अवहेलना होती है तथा, विध्वंसात्मक-पक्षों में रुचि लेती है।

जो लोग अन्तर्राष्ट्रीय समाचारपत्रों के सन्दर्भ में सजग हैं वे इन विभिन्न आरोपों एवं आलोचना के औचित्य को स्वीकार करते हैं। वे यह भी मानते हैं कि घटनाओं एवं समाचारों को रंग देकर, बढ़ा चढ़ाकर छापना, यौन संबंधी बातों में अधिक दिलचस्पी दिखाना, भावों को भड़काने वाली चटपटी सामग्री को बड़े-बड़े शीर्षकों में रंगीन छाया चित्रों के साथ छापना और बनावटीपन देकर रोमांचक बनाने ओर विज्ञापनों की भरमार से समाचारपत्रों को बोझिल बनाने के दौर में विश्व समाचार जगत् उलझ गया है।

दुनिया के अधिकांश समाचारपत्र मनोरंजन परोसने, उन पाठकों की बनावटी इच्छाओं की पूर्ति के साधन बन गये हैं जो धरातलीय सोच से आगे नहीं बढ़ पाते। ऐसे समाचारपत्र उन लोगों के लिए ठीक हैं जो सोचने, समझने ओर विचार करने के प्रयत्नों से बचकर भागने की प्रवृत्ति से ग्रस्त हैं लेकिन जो करोड़ों लोग दुनिया भर में समाचारपत्रों में अपनी जिन्दगी की सच्चाइयों को पढ़ना चाहते हैं, उनके लिए समाचारपत्रों का रवैया निराशाजनक है।

3.2.2 विश्व प्रेस से अपेक्षाएं एवं उसकी विफलता

दरअसल, आलोचकों की विश्व प्रेस से यह अपेक्षा है कि एक बेहतर दुनिया बनाने तथा एक विचारवान् विश्व समाज की संरचना करने के लिए दायित्वपूर्ण पत्रकारिता पर बल दिया जाना चाहिए। आखिर, इन समाचारपत्रों द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली शब्द जाल में फंसी, कल्पना पर आधारित 'फैंटेसी ' या कपोल-कल्पित, ख्याली दुनिया के बजाय यथार्थ रूपी संसार को अभिव्यक्ति देना और वास्तविकता से सरोकार रखना अधिक जरूरी और अनिवार्य बात है। लोगों को वास्तविकता की सूचना दिए जाने का काम करने से समाचारपत्र सही अर्थों मे समाचारपत्र माने जा सकते हैं।

लेकिन समाचारपत्रों की दुनिया को देखा जाए तो सार्थकता के साथ गंभीर चिन्तन या चिन्तक पाठकों से इन समाचारपत्रों का सरोकार बहुत ही कम हो गया है। दरअसल, समाचारपत्रों का दायित्व तो यह है कि वे पाठकों का तथ्य और सत्य से साक्षात्कार कराएं, उन्हें सोचने, विश्लेषण करने ओर घटनाक्रमों से जोड़ने का काम करें लेकिन 'सुपर मार्केट ' पत्रकारिता या दिग्भ्रमित-पत्रकारिता का इस प्रकार के अपने दायित्व से कोई लगाव नहीं रहता है। संपादकीय सामग्री का आंकलन करना, उसका अर्थ और स्पष्टीकरण इस प्रकार प्रस्तुत करना जिससे समाज को एक दिशा मिले, यह तो समाचारपत्र का सोच हो लेकिन विश्व प्रेस सच्चे अर्थों में अश्लीलता

या 'वल्गेरिटी ' से ग्रस्त माने जाने लगी है। विश्व का समाचार - पत्र -जगत् अज्ञान के अंधेरों को दूर करने, ज्ञान का प्रकाश फैलाने, विश्व स्तर पर समन्वय एवं समझ का पोषण करने तथा तर्कहीन विचारों, सामाजिक विभेद, फूट और संकुचित मानसिकता को मिटाने, दुनिया के देशों के बीच-विश्वास की भावना का सुदृढ़ पुल बनाने तथा सृजनात्मक विचारों की और आदर्शों की एक पृष्ठभूमि बनाने की दिशा में पूरी तरह अक्षम और विफल सिद्ध हो रहा है।

3.2.3 अल्पसंख्य श्रेष्ठ समाचारपत्र या प्रेस

विश्व स्तर पर समाचारपत्रों के मध्यम एवं निम्न स्तर या निरन्तर गिरावट के बीच भी कहीं-कहीं एक अच्छे और श्रेष्ठ प्रकार के समाचारपत्रों की झलक मिलती है जो उज्ज्वल- भविष्य की ओर संकेत करती है। कुछ समाचारपत्र ऐसे हैं जो उच्च गुणवत्ता, निष्पक्षता, तथ्यात्मकता और तर्कसंगत ढंग से समाचारों के विश्लेषण पर बल देते हैं। ऐसे समाचारपत्रों की संख्या एवं प्रभाव भले ही दुनिया में अधिक न हो, लेकिन उनका दर्शन उच्च-स्तर, समर्पित एवं विचारवान कर्मचारी एवं पत्रकार ऐसे पक्ष है जिनके कारण कम प्रसार संख्या के बावजूद उनके प्रभाव की छवि अधिक बेहतर है। इस प्रकार के समाचारपत्रों की श्रेष्ठ गुणात्मक एवं उच्च स्तरीय समाचारपत्रों के नाम से पहचान है। इन समाचारपत्रों के संपादकीय सामग्री के चयन के पीछे बौद्धिक एवं आदर्शपूर्ण दृष्टि काम करती है। भारी लाभ कमाना और अधिक प्रसार संख्या के पीछे भागना, इनका लक्ष्य नहीं होता। ऐसे समाचारपत्रों को आशावादी एवं सृजनात्मक पत्रकारिता को समर्पित पत्र माना जाता है। तर्क के आधार पर गंभीर -चिन्तन से प्रेरित ऐसे समाचार -माध्यम समाज को एक उपयोगी और सार्थक दिशा देने का काम करते हैं। 'एलाईट प्रेस ' को ही समाज का दर्पण कहा जा सकता है। ऐसे पत्र, मात्र घटनाओं की रिपोर्ट ही प्रस्तुत नहीं करते बल्कि उनका अपना एक मत भी होता है जिसे साहस के साथ अभिव्यक्ति देने का प्रयत्न किया जाता है।

स्विट्जरलैण्ड के प्रथम श्रेणी के अखबार ' Neu zurcher zeitung ' के संपादकों का मत है कि अखबार का मिशन यह है कि वह घटनाओं की सरल और स्पष्ट तस्वीर प्रस्तुत करे, न कि एक धुंधली तस्वीर सामने रखे। न्यूयार्क टाइम्स के जेम्स रेस्टोन का इस बारे में कथन है कि ' आज की दुनिया में जो खबरें हम छापते हैं, वे नाजुक और कई पहलुओं से ताल्लुक रखने वाली होती हैं। इनको ज्यों का त्यों रखने की बजाए सही रूप में परिभाषित करते हुए प्रस्तुति का सजग प्रयास जरूरी है।

इस सोच के अलावा श्रेष्ठ श्रेणी के अखबारों की अपनी विशेषताएं हैं। ये अखबार चिकने कागज पर मनोरंजनात्मक ढंग से बड़ा-बडी रंगीन भड़कीली तस्वीरें और बड़े शीर्षक वाले अखबार नहीं होते। इस प्रकार के श्रेष्ठ माने जाने अखबारों को देखने पर 'मेकअप' या छपाई के स्तर पर कोई आकर्षण पैदा नहीं होता। कारण यह है कि Neu zurcher zeitung अखबार को दुनिया के दो या तीन श्रेष्ठ समाचारपत्रों में से एक गिना जाता है, लेकिन इसको देखें तो शीर्षक छोटे-छोटे, बहुत कम तस्वीरें, कोई हास्यप्रद सामग्री नहीं और न कोई मनोरंजन का पुट, 'क्रॉसपज्जलस ', महिलाओं का पृष्ठ आदि का अभाव मिलेगा। कोई तड़क-भड़क नहीं। चिन्तन और स्तर में एक शालीनता और गंभीरता मिलेगी।

इसी तरह श्रेष्ठ अखबारों में पहले नम्बर पर पेरिस से प्रकाशित होने वाले दैनिक 'ले मोन्डे ' है। यह भी पूरी तरह ' तथ्यों पर आधारित, विश्लेषणात्मक दृष्टि से विचारपूर्ण अखबार माना जाना है। स्विट्जरलैण्ड के भी दो अखबार ऐसे माने जाते हैं जो देखने में भी आकर्षक हैं तो सामग्री प्रकाशन में भी श्रेष्ठता के मापदण्डों पर खरे माने जाते हैं। फ्रांस और स्केन्डिनेविया में भी ऐसे समाचारपत्र हैं।

ऐसे अखबारों के प्रयासों की दिशा 1947 में 'कमीशन ऑन फ्रीडम ऑफ प्रेस ' द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट पर आधारित है जिसमें कहा गया है कि 'प्रेस को चाहिए कि वह समाज के लिए घटनाओं का सत्यतापूर्ण, सम्पूर्ण एवं बुद्धिमत्तापूर्ण विवरण प्रस्तुत करे जो सार्थक हो '। यह सच है कि दुनिया के कुछ गिनती के श्रेष्ठ अखबार दुनिया को अपने आदर्शों की रोशनी से बेहतर दिशा देने में पूरे कामयाब नहीं हो सकते। लेकिन श्रेष्ठता के अस्तित्व की अपनी बुलन्द आवाज होती है जो कभी बेअसर नहीं जाती।

दुनिया में साक्षरता और शिक्षा के प्रसार के साथ अमेरिका के 'वर्ल्ड प्रेस रिव्यू या अन्य देशों के श्रेष्ठ अखबारों को लोग उनमें प्रकाशित सूचनाओं, खबरों और विचारों को पढ़ते हैं। यह प्रवृत्ति भी देखने को मिलती है कि दुनिया के बेहतर अखबारों और पत्रिकाओं की मांग देशों की सीमाओं के पार अधिक से अधिक पढ़ने के लिए बढ़ने की ओर है। गुणात्मक पत्रकारिता की पहुंच अनेक देशों और भाषाओं तक होती है। ऐसे अखबार एक समझ और स्थायित्व पर आधारित अच्छी दुनिया के निर्माण में. ठोस भूमिका निभाते हैं।

3.2.4 अच्छे अखबारों के प्रकार

हर देश में एक या दो श्रेष्ठ अखबार आमतौर से माने जाते हैं क्योंकि उनमें लोगों का भरोसा होता है। ऐसे में, एक तो वे अखबार होते है जो बुद्धिजीवियों, जनमत निर्माताओं, नेतृत्व करने वालों, जन सेवकों, पत्रकारों, वकील, जजों, व्यावसायिक नेतृत्व आदि द्वारा पढ़े जाते हैं। कुछ पत्र ऐसे भी हो जो सरकार के सही विचारों को अभिव्यक्ति देने तक अपनी सीमा रखते हैं जैसे रूस का 'प्रावदा ', अमेरिका का 'न्यूयार्क टाइम्स' और ब्रिटेन का 'लंदन टाइम्स ' आदि ऐसे अखबार हैं जिन्हें लोग दुनिया के विभिन्न देशों में पढ़ना पसन्द करते हैं। लेकिन श्रेष्ठ अखबारों की गुणात्मकता, प्रकार और शैली भिन्न-भिन्न तरह की मिलती है। वैसे, स्वतन्त्र अखबार एवं अधिनायकवाद के तहत काम करने वाले अच्छे अखबार, ये दो प्रकार माने जा सकते हैं। दैनिक, साप्ताहिक या विशेषज्ञतापूर्ण आदि वर्ग भी हो सकते हैं। 'वाशीस्ट्रीट जनरल ' एवं दैनिक 'बाल्टी मोरसन ' में से एक विशेषज्ञता रखता है तो साधारण पत्र है। कुल मिलाकर गुणात्मकता के स्तर पर प्रतिष्ठा अर्जित करने वाले अखबारों का सरकारी या किसी विचारधारा से सम्बद्ध होने पर भी पाठकों की उनमें रुचि होती है। रूस के 'प्रावदा ', मैक्सिको के EL Nacional, स्वीडन के Dagen’s Nyheter, जर्मनी के Die Welt, स्विट्जरलैण्ड के Neu zurcher zeitung आदि की पहुंच चाहे जितनी हो लेकिन इन्हें प्रभावी समाचारपत्र माना जाता है। गार्जियन, Frankfurter Allgemeina, जर्मनी के Suddeutsche Zeitung आदि प्रमुख और अच्छे अखबार माने जाते हैं। इनमें विचारधारा के बजाय सम्पादकीय सामग्री के चयन एवं गुणात्मकता को आधार माना जाता है। वैसे अनेक पाठकों द्वारा गंभीर से गंभीर बात को गंभीरता से लेने की आदत नहीं होती। ऐसे लोगों के अपने पसन्द के अखबार होते हैं। पाठक लंदन के 'डेली मिरर ' में मसालेदार पढ़ना

पसन्द करेगा। इस प्रकार 'लोकप्रिय ' माने जाने वाले अखबारों के पाठक भी गंभीर और प्रतिष्ठित अखबार पढ़ सकते हैं और दोनों के बीच का अंतर भी महसूस कर सकते हैं।

3.3 दुनिया के अखबारों का सर्वेक्षण

एक सर्वेक्षण के अनुरूप विश्व के बड़े माने जाने वाले अखबारों का झुकाव राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बड़ी घटनाओं की ओर रहता है। मानवीय, स्थानीय और अन्य मुद्दों को यह गौण मानते हैं। राष्ट्रीय - अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं को विस्तार से छापते हैं। गुणात्मक प्रेस का ध्यान राजनैतिक एवं आर्थिक मामलों, सामाजिक समस्याओं के गम्भीर पक्षों, वैज्ञानिक एवं अन्य प्रकार के विकास पर विचारपूर्ण ढंग से केन्द्रित रहता है। ऐसे पत्रों की ओर प्रभावपूर्ण पाठकों का ध्यान आकर्षित होता है। यह स्वतंत्र और सरकार की आलोचना की प्रवृत्ति रखते हैं। लेकिन इस बारे में हुए अनेक सर्वेक्षणों के आधार पर गुणात्मक की परिभाषा भी अलग - अलग की गई। सर्वेक्षण के आधार भी मिल ही रहे हैं। इस बारे में विश्व स्तर पर विशेषज्ञों के एक पैनल के अनुसार निम्नलिखित पांच बिन्दुओं पर गुणात्मक प्रेस की पहचान की जा सकती हैं-

1. स्वतंत्र और श्रेष्ठ प्रेस का आधार यह हो सकता है कि वह स्वतंत्र, वित्तीय दृष्टि से स्थायित्व, सामाजिक सरोकार, स्वच्छ लेखन एवं सम्पादन करने वाली हो।
2. उसका मत दृढ़ हो, स्पष्ट हो, विश्व के प्रति जागृत हो, सनसनीखेज न हो।
3. उसका अधिक सरोकार राजनीतिक, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, अर्थशास्त्र, सामाजिक कामकाज, सांस्कृतिक उत्थान, शिक्षा एवं विज्ञान हो।
4. उसके पास उपयुक्त पढ़े-लिखे, व्यावसायिक स्तर पर कुशल एवं बुद्धिमान कर्मचारी हो और उनके विकास के लिए बराबर प्रयास हो।
5. उसका यह संकल्प हो कि वह अच्छे शिक्षित, बुद्धिमान पाठकों को अपने देश एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अच्छी सामग्री युक्त समाचारपत्र द्वारा अपनी सेवायें देगा तथा हर स्थान पर 'जनमत' निर्माण करने वालों को प्रभावित करने एवं आकर्षित करने का प्रयास होगा।

इस प्रकार के आधार बिन्दुओं को पूरी सख्ती के साथ लागू नहीं किया जाए तो कई समाचारपत्र गुणात्मक की श्रेणी में आते हैं। डॉ. केजर की गुणात्मक या 'ऐलिट' समाचारपत्रों में छः ऐसे है जो Elite Club के सदस्य हैं। इनमें Times of India, La naciono, Corriere della sera, Pravda, O Estado da Sao Paulo तथा Dagens Nyheter का नाम है। केजर के अध्ययन में जिन 'एलिट' अखबारों के नाम नहीं थे, उनके Schramm की सूची में देखा जा सकता है। इनमें London Times, The New York Times, La Prensa, Peking का Ren-min Rih-Pao तथा Frank Furter Allgemeine Zeitung एवं La Monde शामिल है। बहरहाल, सर्वेक्षणों के नतीजों और दुनिया के विभिन्न दृष्टिकोणों एवं मापदण्डों के अनुसार बनी सूचियां एवं समाचारपत्रों की सूची लम्बी है। अनेक अखबार हैं जो किसी न किसी बिन्दु पर कुछ मानकों, स्तर एवं गुणात्मकता का पालन करते है जहां एक ओर भारी प्रसार संख्या और तड़क-भड़क वाले समाचारपत्रों हैं तो दूसरी ओर श्रेष्ठ, गुणात्मक और प्रतिष्ठित अखबार है। इनके प्रसार एवं मुद्रण में भारी अंतर है तो प्रभाव के स्तर पर भी फर्क है।

3.4 विश्व की विकसित प्रेस प्रणालियां

समाचारपत्रों एवं विभिन्न माध्यमों के विकास के लिए साक्षरता, शिक्षा और साधनों की आवश्यकता होती है। लेकिन विकसित देशों का अर्थ है कि वे आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से सम्पन्न है और ऐसी स्थिति में शिक्षा एवं अन्य क्षेत्रों में विकास करने के लिए भी क्षमता रखते हैं। इस संदर्भ में दुनिया के कुछ ऐसे देशों की चर्चा की जा सकती है जो आकार में या जनसंख्या की दृष्टि से भले ही बड़े न हों लेकिन विभिन्न क्षेत्रों में काफी आगे हैं और पत्रकारिता की विकसित प्रणाली का संचालन करते हैं। बीसवीं सदी के अन्तिम दो दशकों में अनेक देशों में सूचना टकनोलॉजी, कम्प्यूटर, इन्टरनेट, वेब आदि विभिन्न प्रणालियों ने संचार क्रान्ति के साथ समाचारपत्रों एवं अन्य सूचना माध्यमों में भारी परिवर्तन किए हैं। लेकिन इस दौर से पहले भी, अस्सी के दशक में कुछ देश ऐसे हैं जो समाचारपत्रों एवं विभिन्न जनसंचार माध्यमों को काफी विकसित करने में सफल हुए हैं।

3.4.1 आस्ट्रेलिया की प्रेस

आस्ट्रेलिया जैसे आबादी के लिहाज से डेढ़ करोड़ की आबादी वाले देश में 1980 में 54 दैनिक समाचारपत्र थे जिनकी कुल प्रसार संख्या उस समय 4.3 मिलियन थी। वहां उस वक्त 234 रेडियो स्टेशन, 145 टी.वी. स्टेशन थे। साक्षरता 98.5 प्रतिशत थी। ऐसे पढ़े-लिखे समाज में, जो तुलनात्मक रूप से नगरीय समाज हो और सम्पन्न भी, वहां समाचार माध्यमों को विकसित होने का अधिक अवसर मिलता है। वहाँ पत्रकारिता की गुणात्मकता भी है और प्रसार भी अधिक है, भले ही वहां की पत्रकारिता की प्रवृत्ति आमतौर से अन्य देशों की साधारण श्रेणी की पत्रकारिता के मार्ग पर ही चलती हो। सिडनी और मेलबर्न वहां की पत्रकारिता के केन्द्र हैं। आस्ट्रेलिया का पहला दैनिक पत्र 'सिडनी सन' 1910 में निकला। विभिन्न विषयों एवं व्यवसाय संबंधी पत्र-पत्रिकाओं के लिहाज से आस्ट्रेलिया की प्रेस स्वस्थ दृष्टिकोण रखती है। देश की भौगोलिक अवस्था या विस्तार के कारण वहाँ समाचारपत्रों के प्रसारण की लागत ज्यादा होती है लेकिन प्रसार संख्या एवं विज्ञापन आमदनी के कारण पत्रों की आर्थिक स्थिति बेहतर है।

समाचारपत्रों एवं अन्य माध्यमों को स्वतन्त्रता है लेकिन कानूनों के दायरे में ही इसका उपयोग सम्भव है। वहां यह कथन माध्यमों में प्रचलित है कि 'यदि अमेरिका का प्रेस जगत पूरा स्वतन्त्र है, ब्रिटेन की प्रेस आधी स्वतंत्र है तो आस्ट्रेलिया की प्रेस एक चौथाई ही स्वतंत्र है। आस्ट्रेलियन एसोसियेटेड प्रेस प्रमुख समाचार एजेन्सी मानी जाती है। लेकिन एक सबसे अच्छा पक्ष यह है कि आस्ट्रेलिया के समाचारपत्र परम्परागत रूप से पत्रकारों, छायाकारों और अपने कलाकारों को प्रशिक्षण देने की जिम्मेदारी को दिलचस्पी के साथ निभाते हैं।

3.4.2 चीन का समाचार जगत्

आस्ट्रेलिया के प्रेस कानूनों की वजह से वहां प्रेस पर कुछ बंधन है और उन्हें पूरी तरह से नियंत्रण मुक्त नहीं माना जाता लेकिन चीन में साम्यवादी विचारधार वाली सरकार मार्क्स -लेनिन के सिद्धांतों पर चलती है और यह मानती है कि प्रेस या माध्यम, राष्ट्रीय विकास के माध्यम या 'टूल ' है। सरकारी और साम्यवादी दल की नीतियों के संदर्भ में जनता को शिक्षित और संगठित

करने के हथियार के रूप में प्रेस का इस्तेमाल किया जाता है। पार्टी की नीतियों का प्रसार करना और आम लोगों में पार्टी के प्रति वफादारी पैदा करना समाचार माध्यमों का प्रमुख कार्य है।

चीन में 'सेन्सर ' शब्द एक बहुत ही हल्का शब्द है। वहां सांस्कृतिक क्रांति के दौर मे राजनीति का दबदबा यहां तक रहा है कि प्रोपेगेन्डा डिपार्टमैन्ट ऑफ दी सेन्ट्रल कमेटी ऑफ कम्यूनिस्ट पार्टी का सीधा नियंत्रण था और जिन पत्रकारों ने अपनी स्वतंत्र आवाज उठाने की कोशिश की, उन्हें जेल में डालना तो साधारण काम रहा है। पत्रकारों को मौत की सजा का भी सामना करना पड़ता था। पीपल्स डेली चीन का सबसे बड़ा अखबार है।

वर्ष 1980 में ही एक अरब की जनसंख्या का पार कर जाने वाले देश चीन में उस समय साक्षरता बीस से पच्चीस प्रतिशत थी लेकिन वहां के 43 दैनिक पत्रों की प्रसार संख्या 32 करोड़ थी। 1998 के अंत में चीन में एक हजार टी.वी. प्रसारण केन्द्र, एक हजार केबल स्टेशन एवं एक हजार शैक्षणिक टी.वी. केन्द्र कार्यरत थे। टी.वी. की पहुंच 90 प्रतिशत आबादी तक हो गई। 90 प्रतिशत घरों में टी.वी. सेट हैं। चीन एक प्रकार से टेलीविजन का विश्व में सबसे बड़ा बाजार है। पीपल्स डेली अखबार की टिप्पणियों एवं सम्पादकीय का सीधा अर्थ कम्यूनिस्ट पार्टी की नीतियों की अभिव्यक्ति माना जाता रहा है। इसके सम्पादकों की नियुक्ति पार्टी की केन्द्रीय कमेटी करती है।

चीन की सांस्कृतिक क्रांति के भयानक दौर से गुजरे चीन के समाचारपत्रों की दशा और दिशा धीरे- धीरे एक नए सोच की ओर मुड़ने की प्रक्रिया से गुजर रही है। चीन की, 'गेन्ग ऑफ फोर' जो बौद्धिकता और पश्चिमी विचारधारा की कट्टर शत्रु थी, उसके समाप्त होने के बाद 'पीपुल्स डेली ' अखबार में नाटकीय परिवर्तन हुए लेकिन चीन में समाचारपत्रों का स्वामित्व सरकार के अधीन रहा है। पत्रकार भले ही पार्टी के सदस्य न हो, परन्तु पार्टी के प्रति उनकी वफादारी अनिवार्य शर्त है। प्रेस की भूमिका ठीक वह सब कुछ अभिव्यक्त करना है जो सरकार चाहती है और जो सरकार को नहीं कहना चाहिए, उसे कहने का प्रेस को कोई हक नहीं है। वहां दो समाचार एजेन्सियां है -चाईना न्यूज एजेन्सी और न्यू चाईना। न्यूज एजेन्सी को भी कोई आजादी नहीं है। वहां भी पत्रकारों के शिक्षण प्रशिक्षण पर बहुत बल दिया जाता है लेकिन पत्रकारिता का पाठ्यक्रम साम्यवादी विचारधारा पर आधारित है और पत्रकार भी वहां की नौकरशाही के अंग होते हैं।

3.4.3 फ्रांस के सूचना माध्यम

फ्रांस एक विकसित देश है जहां की साक्षरता का 97 प्रतिशत और साधनों के बल पर लगभग एक सौ दैनिक पत्रों का प्रकाशन होता है। इनकी कुल प्रसार संख्या एक करोड़ से अधिक है। वहां रेडियो स्टेशन कम हैं लेकिन टी.वी स्टेशनों की संख्या 3135 है। फ्रेन्च भाषा वहां की अखबारों की मुख्य भाषा है। दुनिया के अन्य देशों की तुलना में फ्रांस में पत्रकारिता का विकास सबसे पहले हुआ। वहां 1945 में ही अखबारों की प्रसार संख्या सर्वोच्च बिन्दु पर पहुंच गई। 'लॉ गजट ' नामक अखबार फ्रांस की 1789 क्रांति से पूर्व वहां पहले नम्बर का अखबार था। फ्रांस की पत्रकारिता में 1881 की अवधि को सुनहरी अवधि या गोन्डन एज कहा जाता है क्योंकि इस अवधि में समाचारपत्रों की गुणात्मकता में वृद्धि हुई। 1914 में पेरिस से 80 अखबार निकलते थे। 1980 में ओएस्ट फ्रांस अपने साढ़े सात लाख की प्रसार के साथ फ्रांस का पहला अखबार था। 1970 में फ्रांस की अर्थव्यवस्था में भारी परिवर्तन आए, टकनोलॉजी में सुधार हुआ।

परिणामस्वरूप प्रेस भी समृद्ध हुई। फ्रांस की पत्रकारिता के विकास की गति प्रारम्भिक सालों में, जबकि दुनिया में इसके विकास की रफ्तार कम थी, बहुत तेज रही। लेकिन बाद में भारी गिरावट भी रही।

एक समूह के रूप में भी पत्रकारों का स्तर फ्रांस में बहुत उन्नत है। वेतन काफी अच्छा होता है, फ्रांस की पत्रकारिता में से बड़ी-बड़ी हस्तियां उभरी जैसे जीन पॉल भारत, फेन्कोईज ग्राउड, फ्रांस के राष्ट्रपति मितरां आदि के अलावा एमीले जोला, अल्बर्ट केमस जैसे विख्यात लेखक भी पत्रकारिता की देन रहे।

रात्रि की पारी में काम करने वालों को वेतन का 15 प्रतिशत अधिक देना, खतरनाक प्रकार की रिपोर्टिंग करने वालों के लिए बीमा योजना, काम के दौरान घायल होने पर साल भर का वेतन, अवकाश प्राप्ति पर कई लाभ, मेटरनिटी छुट्टियां आदि कई प्रकार की सुविधाएं पत्रकारों की दी जाती है।

समाचारपत्रों एवं जनसंचार माध्यमों के विकास एवं स्वस्थ रूप से कार्य करने की दिशा में उनकी स्वतन्त्रता का होना अनिवार्य है और फ्रांस ही वह पहला देश है जिसने 24 अगस्त, 1789 को ही प्रेस की स्वतन्त्रता को मौलिक अधिकार का दर्जा प्रदान कर दिया। घोषणा में कहा गया कि 'विचारों और मतों का स्वतन्त्र सम्प्रेषण, मनुष्यों का अमूल्य अधिकार है। इसलिए हर नागरिक को इस स्वतन्त्रता का दुरुपयोग किए बिना बोलने, लिखने या अपने विचार स्वतन्त्र रूप से प्रगट करने का अधिकार दिया गया है।'

पश्चिमी देशों के समाजों की तरह ही फ्रांस में समाचापत्रों की कानूनी सेवाएं चरित्र-हनन की चेष्टा के विचार को ध्यान में रखते हुए ही तय की गई है। फ्रांस में किसी प्रकार की सेन्सरशिप लागू नहीं है। वहां ' ओटोसेन्सर ' या स्वयं अखबार के संयम बरतने के प्रति सचेत रहने की धारणा पर बल दिया जाता है। वहां विदेशी माध्यमों पर भी सेन्सरशिप नहीं है, लेकिन विदेशी पत्र-पत्रिकाओं के प्रसार को बन्द करने का बहुत सरल कानूनी प्रावधान है। वहां के संचालन के आदेश मात्र से किसी समाचारपत्र के संस्करण को रोकना या दबाना सम्भव है। कॉन्सिल ऑफ मिनिस्टर्स के निर्णय से विदेशी जनसंचार माध्यमों पर स्थाई रोक भी लगाई जा सकती है। एजेन्सी फ्रांस प्रेसे (Agence France Prese) (ए.एफ.पी.) एक बड़ी समाचार एजेन्सी है। इसके संबंध ए.पी., यू.पी.आई., रायटर्स जैसी एजेन्सियों के साथ है। फ्राँस में प्रेस को अमेरिका के समान वित्तीय क्षेत्र में स्वतन्त्रता तथा संवैधानिक स्वतन्त्रता तो प्राप्त है लेकिन रूस की तरह राज्य का नियंत्रण भी है। अखबारों का स्वामित्व निजी हाथों में है लेकिन वे बिना सरकारी सहायता के अपने अस्तित्व को बनाए रखने में समर्थ नहीं होते। इसलिए सरकार के प्रतिनिधि भी अखबारों के संचालक मंडल में रखे जाते हैं। फ्रांस की प्रेस की सीमाएं है लेकिन वहां के समाचार, सुदृढ़ और प्रभावपूर्ण इसलिए बना पाए है कि वहां के अखबारों ने समय के साथ स्वय अपने को नियंत्रित एवं संयमित करना सीखा है।

3.4.4 जर्मनी की प्रेस

जर्मनी की चर्चा करते समय यह बात ध्यान में रखनी होगी कि जर्मनी के एक होने से पूर्व वहां पूर्वी जर्मनी एवं पश्चिमी जर्मनी की राजनैतिक व्यवस्था भी दो भागों में बंटी थी और दो प्रकार की शासन व्यवस्था के तहत वहां की प्रेस की भी दो भिन्न-भिन्न प्रणालियां थीं। दूसरे

विश्वयुद्ध के बाद पूर्वी जर्मनी का वह भाग जहां 99 प्रतिशत लोग पढ़े - लिखे थे तथा 75 प्रतिशत जनसंख्या नगरीय थी, वहां कम्यूनिस्ट शासन था। इस प्रणाली में, जैसाकि चीन या अन्य साम्यवादी देशों में प्रेस की स्थिति थी, वैसी ही भूमिका पूर्वी जर्मनी की प्रेस की थी। जर्मन डेमोकेटिक रिपब्लिक में प्रेस की भूमिका रोजाना के घटनाक्रम को अखबारों में प्रकाशित करने के बजाय कम्यूनिस्ट पार्टी की इच्छाओं के अनुरूप जनमत एवं जन धारणाओं का निर्माण करना था। तथ्य एवं सत्य की प्रस्तुति पार्टी के सिद्धान्तों एवं विचारों की सीमा में तोड़-मरोड़ कर पेश की जाती थी।

मध्यकाल में जर्मनी एक प्रकार से पश्चिम में समाचारपत्रों के लिए ही नहीं बाकि छापाखानों के लिए केन्द्र था। मैटल के टाईप का 1440 में गुटेनबर्ग द्वारा विकास किए जाने के बाद जर्मनी में प्रिटिंग प्रेसों का जाल अनेक नगरों तक फैल चुका था। लेकिन समाचारपत्रों का अधिक विकास नहीं हुआ क्योंकि जर्मनी उस काल में कई छोटे -छोटे स्वतन्त्र राज्यों में बंटा हुआ था। 17वीं सदी में जाकर समाचारपत्रों का सिलसिला शुरू हुआ और 1650 में जर्मनी का पहला दैनिक अखबार निकला। सैन्सरशिप के कारण समाचारपत्रों के विकास में बाधा रही। पत्रिकाएं जरूर संख्या में बढ़ी। जोहान कोटा द्वारा 1798 में स्थापित 'एलिग्मान ' अखबार दुनिया में उस काल में प्रसिद्ध था लेकिन हिटलर के शासन में उसे बन्द करवा दिया गया। 1830 से 1848 के क्रान्तिकारी आन्दोलन में अखबार का अर्थ राजनीति या सत्ता के रंग में रंगकर निकलना हो गया। जर्मनी का पहले समाजवादी समाचारपत्र का संपादन कार्ल मार्क्स ने किया जो 1848 में प्रकाशित हुआ और एक साल बाद बंद हो गया। बाद में जर्मन चान्सलर विसमार्क का अखबारों के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण रहा। जर्मनी एक बड़ा औद्योगिक देश बना। देश की प्रगति के साथ अखबारों का भी विकास हुआ और जर्मन साम्राज्य में उस समय 3500 समाचारपत्र निकलते थे। उच्च प्रकार की रिपोर्टिंग वाले गुणात्मक अखबार भी निकलते थे।

इतिहास पर नजर डालें तो ज्ञात होगा कि जर्मनी में पत्रकारिता की दशा प्रथम विश्व युद्ध से पूर्व भी विकसित थी और वहां 4036 दैनिक तथा 3000 साप्ताहिक अखबार छपते थे। 1932 में समाचारपत्रों को काफी स्वतन्त्रता रही और वहां 4700 समाचारपत्रों का प्रकाशन होता था जिनमें 70 प्रतिशत दैनिक थे। उस समय 'बलिगर मोर्गन पोस्ट ' नामक समाचारपत्र की प्रसार संख्या छह लाख थी। 1933 में हिटलर और नाजियों ने समाचार-जगत का ढांचा ही पलट दिया। उसके बाद 1945 तक आते- आते दूसरे विश्व युद्ध ने जर्मनी की प्रेस को तहस-नहस कर दिया। पूर्वी जर्मनी के अखबार एक प्रकार से पार्टी के अखबार बन गए। पूर्वी जर्मनी के संविधान में प्रेस की आजादी की गारंटी तो दी गई लेकिन उसको अन्य कानूनी प्रावधानों से जोड़कर कई पाबंदियों से बांध दिया गया। जब समाचारपत्रों में प्रकाशित सामग्री का आधार राजनैतिक नेतृत्व द्वारा तय होने लगा तो सैन्सरशिप का कोई अर्थ नही रह गया। अर्थात् प्रकाशन पूर्व सैन्सरशिप के कोई मायने नहीं रहे।

पश्चिमी जर्मनी की प्रेस ने 1949 से अपना स्वरूप ग्रहण करना प्रारम्भ किया। प्रेस पर लाइसेंस लेकर अखबार चलाने का प्रतिबंध हटा। सन् 1979 मैं वहां दैनिक अखबारों के 1250 संस्करण निकलते थे। इसके बाद अगले दशक में वहां समाचारपत्रों की संख्या 160 से बढ़कर 1500 हो गई। लेकिन इस समय भी वह 1932 के उस रिकार्ड को नहीं छू सकी जबकि वहां 2889 दैनिक समाचारपत्रों का कुल प्रसार ढाई करोड़ था। इस प्रकार सन् 1450 मैं ईनब्लैटड्रियूक

नामक एक ही प्रति के साथ निकलने वाले जर्मन अखबार के साथ प्रारम्भ पत्रकारिता की जर्मनी में उत्थान -पतन की लंबी कहानी चली।

जर्मनी में इतिहास और शासन प्रणाली में परिवर्तनों के साथ बदलती पत्रकारिता एवं समाचारपत्रों की स्थिति, के बाद जर्मनी फिर से एक देश हुआ। वहां प्रेस की आजादी है लेकिन दो पाबंदियां भी हैं। कुछ स्थितियों में प्रेस को प्राप्त संवैधानिक संरक्षण हटाने तथा व्यक्ति के सम्मान को ठेस पहुंचाने पर कानूनी कार्यवाही जैसे कानून बने हुए हैं। पश्चिम जर्मनी में संविधान के तहत सैन्सरशिप नहीं लगाने का प्रावधान है। लेकिन यौन संबंधी विकृत एवं अश्लील पत्रकारिता ने वहां प्रेस की इस उच्छृंखलता पर पाबंदियों की मांग उठी और कुछ कदम प्रेस को पाबंद करने के लिए उठाए गये हैं।

3.5 भारत में समाचारपत्र

भारत में समाचार-माध्यमों का आजादी के बाद दुनिया में गुणात्मकता के स्तर पर उज्ज्वल इतिहास रहा है। किसी भी स्वतन्त्र देश में जहां राजनैतिक और सामाजिक स्वस्थता सूचना के स्वतन्त्र -प्रवाह पर आधारित रहती है, वहां प्रेस की स्वतन्त्रता अत्यन्त आवश्यक मानी जाती है। भारत के संदर्भ में, 1975 से 1977 तक की लगभग दो साल की एक असाधारण परिस्थिति को छोड़कर भारत में समाचारपत्रों की आजादी का गत अर्ध -शताब्दी का इतिहास एशिया के कई राष्ट्रों के लिए ईर्ष्या का कारण हो सकता है क्योंकि बीसवीं सदी के अन्तिम 50 सालों में भारतीय प्रेस ने स्वतंत्र -हवा में सांस ली। श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा लगाए गए आपात्काल की अवधि में जरूर भारतीय प्रेस को जबरदस्त धक्का लगा और घुटन का एहसास हुआ।

लेकिन हर स्वतंत्र देश की प्रेस की तरह भारतीय प्रेस ने भी उन राजनैतिक दबावों को समय-समय पर अनुभव किया जो समाचार -माध्यमों की आलोचना राजनेताओं के आचरण को उद्घाटित करने पर आमतौर से सरकारों द्वारा समाचारपत्रों की आजादी को सीमित करने के लिए डालती है।

भारतीय प्रेस की सबसे बड़ी समस्या यहां की साक्षरता, भाषागत विभिन्नता आदि रही है। फ्रांस या अमेरिका जैसे दुनिया के देशों में जहां साक्षरता शत-प्रतिशत के करीब है और भाषाओं की इतनी भिन्नता नहीं है, उनकी तुलना में भारतीय प्रेस के विकास में कई बाधाएं रहीं। आजादी के तीन -दशक से कुछ समय बाद के परिदृश्य पर नजर डालें तो भारत में 34 प्रतिशत साक्षरता थी। 1977 में 929 दैनिक पत्र थे और उनकी प्रसार संख्या एक करोड़ थी। प्रति एक हजार व्यक्तियों के बीच मात्र 17 पाठक थे। रेडियो स्टेशनों की संख्या 84 थी और मात्र 17 टी.वी. प्रसारण केन्द्र थे। प्रति एक हजार लोगों के बीच मुश्किल से 1.5 टी.वी. सेट थे। यद्यपि सदी के अन्त तक स्थितियों में भारी फेरबदल हुआ है और परिदृश्य तेजी से बदला है। बिहार प्रदेश में साक्षरता का प्रतिशत मात्र 24 था। इन स्थितियों में तथा कम आय वाले भारत जैसी सदियों की गुलामी का बोझ सहने वाले देश के फिर भी हौसले का परिचय दिया है।

यद्यपि भारतीय प्रेस का वर्तमान स्वरूप ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में ब्रिटिशकाल की प्रवत्तियों को अपने साथ लेकर उभरा है। भारत में समाचारपत्रों की यात्रा 1780 में अगस्ट्रस हिक्की द्वारा कलकत्ता से प्रारम्भ बंगाल गजट से शुरू हुई। इस पहले अखबार के सम्पादक को

ब्रिटिश सरकार ने जेल का रास्ता दिखाया। उसने गरीबी भोगी। स्व अंग्रेजी साप्ताहिक के रूप में 'टाइम्स ऑफ इण्डिया ' 1838 में शुरू हुआ। 1850 में यह अखबार दैनिक हुआ। फिर 1850 में 'स्टेट्स मैन ' अखबार का जन्म हुआ। 1878 में फिर एक और अंग्रेजी अखबार 'हिन्दू, 1881 में 'ट्रिब्यून ' आदि का प्रारम्भ हुआ। इस प्रकार अंग्रेजी के प्रभाव से अंग्रेजी प्रेस का दौर शुरू हुआ। साथ ही 1822 में गुजराती में 'बम्बई समाचार पहले ही प्रारम्भ हो चुका था।

भारतीय पत्रकारिता और प्रेस की ऊर्जा का स्रोत' राष्ट्रवाद रहा है। महात्मा गांधी ने 1919 में 'यंग इण्डिया ' और 1933 में 'हरिजन ' अखबार शुरू किए। पण्डित नेहरू ने 'नेशनल हेराल्ड' प्रारम्भ करवाया। स्वतन्त्रता संग्राम में योग देने वाले कई देशभक्तों ने समाचारपत्रों एवं पत्रकारिता को मिशन मानते हुए, इसमें अपनी आहुतियां दी। अंग्रेजी अखबार उस समय भी और आज भी अपने प्रारम्भिक प्रवृत्ति से मुक्त नहीं हुए लेकिन गुजराती, मलयालम, बंगाली, मराठी, उर्दू, तमिल आदि भाषाओं तथा हिन्दी के अखबारों ने प्रसार के स्तर पर आजादी के बाद के पाँच दशकों में छलांग लगाई है। अंग्रेजी के अखबार भी प्रसार में आगे बढ़े हैं। भारतीय प्रेस का चरित्र बदलने लगा है लेकिन इसके अधिकांश प्रकाशन और प्रसार के केन्द्र महानगरों और नगरों तक सीमित रहे। यातायात, संचार एवं साधनों के बढ़ने से स्थितियां बदल रही हैं और समाचारपत्रों में ग्रामीण क्षेत्रों की कवरेज एवं ग्रामीण क्षेत्रों में प्रसार बढ़ने लगा है। सोवियत नीति की ओर भारतीय राजनीति के झुकाव के कारण 1980 में सोवियत रूस के 50 पत्र-पत्रिकाओं की भारत में सात लाख प्रसार संख्या थी। राजनैतिक दलों ने भी अखबार निकाले हैं।

टाइम्स ऑफ इण्डिया, इण्डियन एक्सप्रेस, हिन्दुस्तान टाइम्स, हिन्दू, अमृत बाजार पत्रिका, नवभारत टाइम्स एवं हिन्दुस्तान आदि कई अखबारों का दबदबा रहा है और अन्य प्रदेशों में भी समाचारपत्र उभरे और आगे बड़े हैं।

भारत में संविधान के अन्तर्गत हर नागरिक को बोलने, लिखने एवं अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का मौलिक अधिकार दिया गया है। इसी स्वतन्त्रता की संविधान की धारा 19 ही समाचारपत्रों की स्वतन्त्रता की गारंटी है। लेकिन भारतीय प्रेस कानूनों की एक लम्बी श्रृंखला है। हर समाचारपत्र को अपने को रजिस्टर करवाना, शीर्षक, स्वामित्व एवं अन्य विवरण के साथ सरकारी घोषणा पत्र भरना आदि के नियमों का बंधन है। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय प्रेस पर नजर रखता है।

लेकिन कुल मिलाकर भारतीय समाचारपत्रों को स्वतन्त्रता है। आपातकाल में 'इण्डियन एक्सप्रेस ' एवं अन्य समाचारपत्रों ने भी अपनी आजादी के लिए संघर्ष किया। भारत में पत्रकारिता, टेलीविजन आदि विभिन्न जनसंचार माध्यमों के शिक्षण- प्रशिक्षण के लिए संस्थाएँ बनीं। पी.टी.आई एवं यू.एन.आई., हिन्दुस्तान समाचार, समाचार भारती आदि प्रमुख समाचार एजेन्सियों का भी विकास हुआ लेकिन हिन्दुस्तान समाचार एजेन्सी जैसी कई एजेन्सियों और समाचारपत्र आपातकाल की बलि चढ़ गए। हिन्दी समाचारपत्रों के विकास के कारण पी.टी.आई. ने ' भाषा ' और यू.एन.आई. ने 'यूनीवार्ता ' जैसी हिन्दी समाचार सेवाएं शुरू की हैं।

समाचारपत्रों, समाचार एजेन्सियों एवं अन्य क्षेत्रों में विकास की दिशा में जनसंचार पत्रकारिता में शिक्षण -प्रशिक्षण के प्रयास तो हुए हैं लेकिन इस संदर्भ में आज भी ये प्रयास काफी अपर्याप्त है। भारत के अनेक विश्वविद्यालयों में पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग हैं। वर्तमान में देश में लगभग 70 से अधिक जनसंचार विभाग विश्वविद्यालयों में चल रहे हैं। 'कोटा खुला

विश्वविद्यालय ने दूरस्थ शिक्षा में सर्व प्रथम पत्रकारिता एवं जनसंचार में स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम शुरू कर जनसंचार-प्रशिक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत की।

भारत एक देश के रूप में अति प्राचीन है लेकिन स्वतन्त्रता के संदर्भ में अभी अर्द्ध सदी ही पार की है। गुलामी का विगत का इतिहास और इसकी आर्थिक, भौगोलिक एवं अन्य संदर्भो की कठिनाईयों के होते हुए तथा विकास के लिए उपयुक्त वातावरण के अभाव में भी प्रेस की अपनी विशेषताएं और ऊर्जा है जिनके बल पर इसने अपनी एक बेहतर छवि बनाई है। इसकी आवाज में गंभीरता और सोच पैदा हुआ है। विगत की कठिनाइयों और कटु अनुभवों के बावजूद भारतीय प्रेस की दशा एक उज्ज्वल भविष्य का संकेत देती है। बौद्धिक-स्वर भी ऊंचा है। ऐसे में दुनिया के प्रेम - जगत् में भारतीय प्रेस की अपनी प्रतिष्ठा और स्थान है।

3.6 इजरायल, जापान एवं अन्य देशों के जनसंचार माध्यम

इजरायल की सम्प्रेषण प्रणाली (कम्यूनिकेशन सिस्टम) और समाचारपत्र बहुत विकसित अवस्था में हैं। दूर-दराज के स्थानों पर भी वहां 24 दैनिक अखबार पढ़ने को मिल सकते हैं। इजरायल में 90 प्रतिशत से अधिक लोग साक्षर हैं। वहां के 24 अखबारों की 1980 में 13 लाख प्रसार संख्या थी। वहां केन्द्रीय सूचना विभाग तथा राजकीय मुद्रणालय के कार्यालयों के माध्यम से प्रेस पर निगाह रखी जाती है। सैन्सरशिप के मामले में उदारता रखने की परम्परा है। ऐसोसिएटेड इजरायल प्रेस वहां की राष्ट्रीय समाचार एजेन्सी है। पत्रकारों के लिए शिक्षण-प्रशिक्षण की पूरी व्यवस्था है।

एक लम्बे समय तक विदेशी शासन को भोगने वाले भारतीय प्रेस जिस प्रकार राजनैतिक घटनाओं और राजनैतिक चक्र के इर्द-गिर्द घूमती रही है और आज भी इस प्रवृत्ति से पूरी तरह मुक्त होकर विस्तृत और रचनात्मक जीवन के विविध पक्षों और आम आदमी की तकलीफों से नहीं जुड़ी है, वैसे ही इटली की प्रेस का झुकाव परम्परागत रूप से राजनैतिक घटनाक्रम की ओर अधिक रहा है। फ्रांस की तरह इटली के प्रेस को भी पूर्ण स्वतन्त्रता की गारंटी है और वह राजनैतिक एवं सैन्सर के दबाव से मुक्त है। इटली में पत्रकारों का दर्जा व्यावसायिक रूप से सबसे ऊपर है। उन्हें बहुत अच्छा वेतन, नौकरी की सुरक्षा, सामाजिक सम्मान, अनेक सुविधाएं आदि दिए जाने की व्यवस्था है जो दुनिया के विभिन्न देशों की प्रेस प्रणालियों की तुलना में पहले नम्बर की है। वहां प्रेस का स्वामित्व राजनीतिक विचारधारा का आकर्षण नहीं है। समाचारपत्र व्यावसायिक स्तर पर प्रकाशित होते हैं जिनका लक्ष्य राजनीति नहीं बल्कि व्यवसाय के माध्यम सै धन कमाना है। इस प्रकार व्यावसायिक दृष्टिकोण के बढ़ते वहां की राजनीति के रंगों से बहुत अधिक मुक्त है।

जापान में पत्रकारिता तुलनात्मक स्तर पर युवा है, लेकिन बहुत आधुनिक है। सरकार नियंत्रणों से मुक्त है परन्तु एक 'वॉच डॉग ' या समाज के हितों के संरक्षण के स्तर पर बहुत प्रभावी नहीं है। जापान में लगभग 99 प्रतिशत साक्षरता है। 126 दैनिक अखबार हैं। लगभग सात करोड़ से अधिक इनका प्रसार है। प्रति एक हजार में से 571 व्यक्तियों तक अखबारों की पहुंच है। 981 रेडियो स्टेशन तथा 10 हजार से अधिक टी.वी. स्टेशन हैं। जापान का पहला अखबार 'बोटाविया शिमाउन ' है जो 1861 में प्रकाशित हुआ।

जापान की प्रेस स्वतंत्र है। मानहानि, निजी जीवन, अश्लीलता, ऑफिसियल सीक्रेट आदि कुछ मुद्दों से संबंधित कानून हैं जो प्रेस को अपनी स्वतन्त्रता से बाहर काम करने से रोकते है। शिक्षण-प्रशिक्षण के लिए विविध संस्थान हैं।

3.7 विश्व - समाचार जगत् की विशेषताएं

दुनिया का समाचार -जगत् राजनैतिक उत्थान और पतन के दौर से गुजरा है। अधिनायकवाद या साम्यवाद की तुलना में स्वतंत्र देशों में समाचार जगत् को अधिक स्वतन्त्रता है और इस पक्ष ने उन्हें विकसित होने में मदद की है। आर्थिक स्थिति, यातायात, संचार, टकनोलॉजी, भौगोलिक स्थितियों, साक्षरता आदि उनके ऐसे मुद्दे हैं जो प्रेस के विकास से जुडे रहे हैं।

दूसरे विश्वयुद्ध के बाद दुनिया के अनेक देश आजाद हुए और इससे प्रेस को भी आजादी से काम करने के अधिक अवसर मिले हैं। सूचना टकनोलॉजी ने बीसवीं सदी के अन्त के दशकों मैं समाचारपत्रों सहित सभी समाचार-माध्यमों को नई दशा एवं नई गति दी है। अधिकांश देशों के समाचारपत्रों का रुख राजनीतिक से अधिक प्रेरित रहा है जबकि कुछ देशों में पूर्णत: यह एक व्यावसायिक प्रकिया है और ऐसे में राजनीतिक प्रपत्रों से मुक्त है। दुनिया कुछ सालों पहले दो विचारधारओं-साम्यवाद एवं पूंजीवाद के बीच फंसी रही और इससे समाचार -जगत् भी दो धड़ों में बंटा। लेकिन बीसवीं सदी के अन्त और इक्कीसवीं सदी के प्रारम्भ में सूचना क्रांति ने अखबारों और अन्य समाचार -माध्यमों को एक नई शक्ति और एक नया जोश दिया है जो राजनीति एवं अर्थनीति की शक्ति को कम करके ज्ञान के प्रसार पर केन्द्रित है। ऐसे में दुनिया का समाचारपत्र जगत् और जनसंचार माध्यम नई सदी में एक नई भूमिका की संभावनाए लेकर पहुंचे हैं।

3.8 सारांश

समाचारपत्रों का विश्व स्तर पर आकलन करना एक कठिन कार्य है लेकिन कुछ देशों के समाचार जगत् के ऐतिहासिक एवं समसामयिक परिवेश पर दृष्टि डालें तो आमतौर से दुनिया के समाचारपत्रों की दशा और दिशा का एक मोटा संकेत मिलता है। दुनिया में अपवाद भी है लेकिन आमतौर से समाचारपत्रों के अस्तित्व विकास और स्वस्थता के स्तर पर समाचारों के स्वतन्त्र प्रवाह, सैन्सरशिप का अनावश्यक अंकुश न होना, स्वयं प्रेस के द्वारा अपनी सीमाओं में स्वतंत्रता का उपभोग करना तथा सामाजिक हितों को सर्वोपरि मानना ऐसे कुछ बिन्दु है जो विश्व स्तर पर प्रेस को कहीं एक मोड़ पर लाकर आपस में एक विश्व प्रेस की छवि प्रस्तुत करने को प्रेरित करते हैं।

3.9 निबन्धात्मक प्रश्न

1. विश्व प्रेस से क्या अपेक्षाएं हैं? साथ ही उनकी विफलता, आलोचना पर भी प्रकाश डालिए।
2. विश्व की विकसित प्रेस प्रणाली पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
3. विश्व समाचार जगत् की विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।
4. दुनिया के अखबारों का सर्वेक्षण कर आप किस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं? विवेचना कीजिए।
5. विश्व समाचार -जगत के बदलते आयामों की चर्चा कीजिए।

विश्वविद्यालय द्वारा संचालित पाठ्यक्रमों की सूची

	पाठ्यक्रम का नाम	अवधि
1.	स्नातक उपाधि प्रारम्भिक पाठ्यक्रम	6 माह
2.	भोजन एवं पोषण में सर्टिफिकेट	6 माह
3.	कम्प्यूटर ज्ञान एवं प्रशिक्षण का प्रारम्भिक पाठ्यक्रम	6 माह
4.	सर्टिफिकेट इन कम्प्यूटिंग	6 माह
5.	पंचायती राज प्रोजेक्ट में प्रमाण-पत्र	6 माह
6.	संस्कृति एवं पर्यटन में प्रमाण-पत्र	6 माह
7.	महिलाओं में वैद्यानिक बोध में प्रमाण-पत्र	6 माह
8.	राजस्थानी भाषा एवं संस्कृति में प्रमाण-पत्र	6 माह
9.	बी.ए.एफ./बी.सी.एफ. (त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम)	1 वर्ष
10.	एम.ए.(अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, इतिहास, हिन्दी)	2 वर्ष
11.	एम.बी.ए.	3 वर्ष
12.	पी.जी.डी.एच.आर.एम.	1 वर्ष
13.	पी.जी.डी.एफ.एम.	1 वर्ष
14.	पी.जी.डी.एम.एम.	1 वर्ष
15.	पी.जी.डी.एल.एल.	1 वर्ष
16.	टी.एच.एम.	1 वर्ष
17.	डी.एन.एच.ई.	1 वर्ष
18.	डी.सी.ओ.	1 वर्ष
19.	डी.एल.एस.	1 वर्ष
20.	डी.सी.सी.टी.	18 माह
21.	बी.जे.(एम.सी.)	1 वर्ष
22.	एम.जे.(एम.सी.)	2 वर्ष
23.	बी.लिब.	1 वर्ष
24.	पर्यावरण विज्ञान में स्नातकोत्तर डिप्लोमा	1 वर्ष
25.	बी.एड.	2 वर्ष
26.	पी.एच.डी.	3 वर्ष
27.	पी.जी.डी.ई.एस.डी.	1 वर्ष